एक प्रति १० रुपए * वार्षिक १०० रुपए

# समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मई २००६ * वर्ष ५६ * अंक ५

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के दशम् प्रादेशिक अधिवेशन - 'विकास उत्सव-२००६' ( भुवनेश्वर ) को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन के दशम् प्रादेशिक अधिवेशन - 'ज्योत्स्ना पर्व - २००६' ( पटना सिटी ) के अवसर पर पदाधिकारीगण मशाल लिए हुए ।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन ( देवघर ) के समापन समारोह में बायें से श्री ओमप्रकाश छावछरिया, अध्यक्ष, देवघर शाखा, श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, प्रान्तीय अध्यक्ष ( भाषण देते हुए ), श्री त्रिलोक चन्द बाजला, स्वागताध्यक्ष, श्री अभय सर्राफ, स्वागत मंत्री, श्री शंकरलाल सिंघानिया, कोषाध्यक्ष ।

Telegram : APAKASAMAJ

Estd. 1935

Phone : 2268-0319
Fax : 033-2282 8760

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
# ALL INDIA MARWARI FEDERATION

152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007

| अध्यक्ष | महामंत्री | संयुक्त महामंत्री | संयुक्त महामंत्री | कोषाध्यक्ष |
|---|---|---|---|---|
| मोहनलाल तुलस्यान | भानीराम सुरेका | राम अवतार पोद्दार | राज के. पुरोहित | हरिप्रसाद कानोड़िया |

उपाध्यक्ष : डॉ. जय प्रकाश मुँदड़ा, सीताराम शर्मा, नन्दलाल रुंगटा, ओंकारमल अग्रवाल, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, बालकृष्ण गोयनका

Under Certificate of Posting

## सूचना

Under Certificate of Posting

दिनांक : १९ मई २००६

**अखिल भारतीय समिति के सदस्यों की सेवा में**

प्रिय महोदय,

सम्मेलन की **अखिल भारतीय समिति** की आगामी बैठक **दिनांक १३ जून २००६** वार मंगलवार को **अपरान्ह ३ बजे आमदार निवास ( एम०एल०ए० हॉस्टल) सिविल लाईन्स, नागपुर** में निम्नलिखित विषयों के विचारार्थ होगी :

(१) गत बैठक की कार्यवाही पारित करना ।
(२) महामंत्री का प्रतिवेदन ।
(३) संविधान की धारा १५ के अनुसार नये सत्र के सभापति का निर्वाचन ।

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है ।

भवदीय

राम अवतार पोद्दार

( राम अवतार पोद्दार )
संयुक्त महामंत्री
वास्ते राष्ट्रीय महामंत्री

### विशेष सूचना

१. कृपया अपने पहुँचने की अग्रिम सूचना निम्नलिखित पदाधिकारियों में से किसी एक को देवें । वापसी आरक्षण यथासंभव करा कर पधारें ।
   (अ) श्री रमेशचन्द्र बंग, अध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, हिंगना - ४४१११०, जिला - नागपुर, फोन नं० - ०७१०४-२७६१२२/२४४, मोबाइल - ९४२३१०१७००
   (ब) श्री ललित गांधी, महामंत्री, महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, फेडरेशन हाउस, १९८, तारा राणी चौक, कोल्हापुर - ४१६००३ , फोन - ०२३१-२६६१६८१/२६४२५४८, मोबाइल - ९८२२०७११६२
   (स) श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका, नेहरू रोड, जालना - ४३१२०३
   फोन - ०२४८२-२३११९२, मोबाइल - ९४२२७२३१२५
२. आपके ठहरने की व्यवस्था **एम०एल०ए० हॉस्टल, सिविल लाइन्स, नागपुर** में ही की गई है ।

# इस अंक में


| | |
|---|---|
| अनुक्रमणिका- | ३ |
| जनवाणी | ४-५ |
| सम्पादकीय- | ७ |
| अध्यक्ष की कलम से/श्री मोहनलाल तुलस्यान | ९ |
| समृद्ध परम्परा है राजस्थानी संस्कृति की/श्री दीपचन्द नाहटा | १० |
| कविता/ मत पीटै नित ढोल/श्री सीताराम महर्षि | १० |
| प्रत्येक बंगाली टैगोर या अमर्त्य सेन नहीं होता.../श्री सीताराम शर्मा | ११ |
| संस्कार/श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल | १२ |
| संगठन ही शक्ति है/ श्री रतन लाल राठी | १२ |
| महामंत्री श्री भानीराम सुरेका का प्रतिवेदन | १३ |
| सतगुणी मारवाड़ी/श्री श्यामा जीवराजका | १४ |
| कविता/ नव वर्ष की शुभकामनाएं/ डा. प्रमोद अग्रवाल | १४ |
| नेहरू परिवार- खेतड़ीराज.../डॉ. मनोहर लाल गोयल | १५-१६ |
| दहेज लालसा ने कुतरा पवित्र विवाह/श्री ईश्वर चंद जैन | १६ |
| कुछ तो बोलो जनमेजय/श्री बंशी लाल बाहेती | १७-१९ |
| कविता- अरदास/ डा. उदयवीर शर्मा | १९ |
| अेक कहाणी अैड़ी/श्री रामस्वरूप किसान | २० |
| कविताएं/ धरती धोरां री/जिज्ञासा/समय विटप/ मोहभंग/ श्री कन्हैया लाल सेठिया | २१ |
| सेवा के तरीके बदले हैं भावना नहीं/श्री ओम प्रकाश पोद्दार | २२ |
| हरियाणवी ठिठोली- मोहनिया की लुगाई/श्री अनुप अनुपम | २२ |


# युग पथ चरण


अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सहित झारखण्ड, पूर्वोत्तर आदि प्रादेशिक सम्मेलनों एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के कार्यक्रमों की रिपोर्टें। २३-२६



**समाज विकास**
मई, २००६
वर्ष ५६, अंक ५
एक प्रति- १० रु.
वार्षिक- १०० रु.


## समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोन-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

*प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।*


*स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।*
*संपादक : नंदकिशोर जालान*

# जनवाणी

इस स्तंभ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित हैं।

–सम्पादक

### श्री सीताराम शर्मा द्वारा सम्पादित पुस्तक : *'युनाइटेड नेशन्स : १०० पापुलर क्वेश्चन एण्ड आन्सर्स' पर प्राप्त बधाइयाँ*

I can summarize my feelings for the books as I-2 : E-2. Simply put it was one of the most interesting, informative, engrossing and educational books that I have come across and I look forward to receiving similar books in the future too.

-H.P. Budhia
Chairman, Patton International Ltd.

आपको शानदार प्रकाशन के लिए बधाई। पढ़कर आनन्द आया एवं बहुत कुछ नयी जानकारी प्राप्त हुई।

-हर्षवर्द्धन नेवटिया, कलकत्ता

यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि आप जैसा बहुआयामी व्यक्तित्व व्यावसायिक व्यस्तता के बावजूद साहित्य रचना के माध्यम से समाज की सेवा कर रहे हैं।

-नन्दलाल रूंगटा
उपाध्यक्ष, अ.भा.मा. सम्मेलन

बधाई! पुस्तक बहुत ही शिक्षाप्रद एवं ज्ञानवर्द्धक है। आपका प्रयास स्तुत्य है।

-हनुमान सरावगी, रांची
पूर्व अध्यक्ष, अ.भा.मा. सम्मेलन

Your book "United Nation : 100 Popular Questions & Answers" gives very useful information about the United Nations and is a good reference document.

I compliment you as the Editor of the book.

-Hari Shanker Singhania
President, J.K. Organisation &
Ex-President, All India Marwari Federation

आपकी पुस्तक बहुत सहज एवं सरल भाषा में राष्ट्रसंघ के विषय में अद्भुत जानकारियां प्रदान करती हैं।

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल माननीय गोपाल कृष्ण गांधी द्वारा राजभवन से आपकी पुस्तक के विमोचन के अवसर पर मुझे उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आपको इस उपयोगी एवं महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिये बधाई।

-भानीराम सुरेका,
महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पुस्तक लेखन के लिये आपको हार्दिक बधाई। यह पुस्तक विशेषकर बुद्धिजीवियों के लिये काफी उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

-रामगोपाल खेतान
पत्रकार, रानीगंज

आशा है कि पुस्तक के प्रकाशन से शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों एवं विद्यार्थियों को सारगर्भित जानकारियां प्राप्त हो सकेगी। लोकहित में आपका यह प्रयास अत्यन्त ही सराहनीय है। आपके इसी तरह के प्रयास एवं समाज सेवा के कार्यों ने ही आपकी पृथक पहचान बनाई है। यही आपकी लोकप्रियता का मापदंड है।

यह पुस्तक अपने उच्च सोपानों को प्राप्त करे, इन्हीं कामनाओं के साथ।

-सत्यनारायण शर्मा
पूर्व शिक्षा मंत्री, छत्तीसगढ़ सरकार, रायपुर

मैं आपको केवल सम्मेलन के उपाध्यक्ष के रूप में जानता था। मुझे ज्ञात नहीं था कि आप संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यक्रमों एवं उद्देश्यों के प्रोत्साहन में इतने सक्रिय रूप से भूमिका निभा रहे हैं।

पुस्तक में प्रश्नों का चयन बहुत सुन्दर हुआ है। इतनी उपयोगी पुस्तक के उत्तम सम्पादन के लिये आपको मेरी हार्दिक बधाई।

-कैलाशमल दुगड़, चेन्नई
अध्यक्ष, तामिलनाडु प्रा.मा. सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्रसंघ के विषय में इतनी विशद जानकारी को गागर में सागर के रूप में प्रस्तुत करने के लिये आप बधाई के पात्र हैं।

-रमेश कुमार बंग, हैदराबाद
अध्यक्ष, आंध्र प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन

आपकी पुस्तक राष्ट्रसंघ पर एक महत्वपूर्ण संदर्भ पुस्तक है। हमें आपके कृतित्व पर गर्व है। -ललित गांधी
महामंत्री, महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

---

पहले हफ्ते से ही पत्रिका का इन्तजार होने लगता है। यह चाहत और जानकारी सब आप लोगों के मेहनत का फल है। पूरे महीने का संग्रह कर हम घर बैठे एक पत्रिका के माध्यम से सब जानकारी ले पाते हैं। हमारे समाज का यह एक जनपत्रिका है तथा पंचांग का काम करता है।

-अशोक कुमार अग्रवाल,
खेतराजपुर, सम्बलपुर

'समाज विकास' के अप्रैल अंक की विशेषता यह है कि इसमें बंगाल के मुख्यमंत्री की स्वीकृति है : 'हिन्दी भाषियों की राज्य के आर्थिक व सामाजिक विकास में बहुत बड़ी भूमिका है' और वाममोर्चा के चेयरमैन श्री विमान बोस का अनुमोदन भी है- "राजस्थानवासियों का बंगाल के

विकास में विशेष योगदान है।"

'समाज विकास' के अंकों से मालूम होता रहा है कि बंगाल में बसे राजस्थानी कितना स्थानीय समुन्नति के लिए कर रहे हैं, जो विकास और उत्थान की गतिविधियां हैं उनका लाभ बंगाली और राजस्थानी की सीमाओं में नहीं रह सकता। फिर भी लगता है कि जो आयोजन हों उनमें बंगाल में बंगालियों का उत्थान हो इस ओर और अधिक चेष्टा रहनी चाहिए। मारवाड़ियों की बंगाल में सम्पदा है, परन्तु आधिपत्य नहीं है, और जब-जब आधिपत्य-भाव के प्रति दुराग्रह हुआ है, कटुता हुई है ज्यादा भुगतान उन्हीं को पड़ा है जिन्होंने विकास को स्ववर्ग तक सीमित रखा है। मुख्यमंत्री और चेयरमैन ने कहा है उसे आगे ले जाने के प्रश्नों पर अधिक गंभीरता तथा गतिशीलता से विचार की आवश्यकता है।

-राजेन्द्र शंकर भट्ट, जयपुर

### भूल सुधार

*अप्रैल अंक में 'जाने कहाँ गये वो दिन' लेख में 'स्व.' शब्द किशोरीलाल ढांढनिया के आगे प्रिन्ट होने के बदले, श्री हरीशंकर सिंघानिया के आगे प्रिन्ट हो गया। इस प्रिन्टिंग भूल के लिये हमें अत्यधिक खेद है।*

# राजस्थान में सरस्वती नदी के पुनः जागरण की संभावनाएं

सिंधु घाटी सभ्यता के समय सरस्वती नदी राजस्थान के एक बड़े भू-भाग में बहती हुई चारों ओर हर क्षेत्र में खुशहाली का अम्बार बिखेरती थी। यह भी मान्यता है कि गंगा, यमुना और सरस्वती के मिलन के कारण प्रयाग सर्वाधिक महत्व का तीर्थस्थान माना जाता है लेकिन एक समय काफी बड़े भूकंप ने सरस्वती नदी के प्रवाह में पूर्ण अवरोध उत्पन्न कर दिया। पर्यवेक्षकों एवं वैज्ञानिक अन्वेषकों ने सरस्वती के मार्ग की रूपरेखा तैयार की थी और उसके फलस्वरूप यह प्रश्न उठता रहा है कि उसके जमीनी पानी के उपयोग के उपाय हो सकते हैं क्या?

सरस्वती नदी के पुनः जागरण की संभावनाएं पिछले वर्षों में निश्चित रूप से उभर कर आयी है। जैसलमेर (राजस्थान) की सरहद के आसपास इस नदी के जल भंडार से पानी निकालना प्रारंभ किया गया है। आयल एण्ड नैचुरल गैस कमीशन (ओएनजीसी) ने तेल (क्रूड आयल) के अपार भंडार की खोज में कुएं खोदने प्रारंभ किये हैं। उसके अंतर्गत लगभग एक सौ से अधिक जगहों पर जमीन के अंदर मीठे व खारे पानी के भंडार के अपार स्रोत मिले हैं। कुछ और जगहों पर भी इस ओर प्रयास हुए हैं। आगामी १०-१५ वर्षों में सरस्वती नदी के संपूर्ण जागरण के लिए भी यदि कोई योजना तैयार की जाए (जिसकी संभावना उजागर है) तो सरस्वती नदी के पुनः जागरण की उम्मीदें काफी बड़ा सक्रिय रूप ले सकती है और दक्षिणी राजस्थान पुनः बहुत बड़े सर-सब्ज बाग के रूप में निखर सकता है।

## जोरहाट घटना

### मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कार्यवाही

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया से फोन पर जोरहाट के मारवाड़ी पट्टी इलाके में कुछ-कुछ दुकानों में तोड़-फोड़ की घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की।

असम के प्रांतीय सम्मेलन के पदाधिकारियों ने जिला अधिकारियों द्वारा तुरन्त समुचित कार्यवाही पर सन्तोष व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया है कि स्थिति पूर्णतया नियंत्रण में है एवं असम सरकार द्वारा पूरा सहयोग दिया जा रहा है।

ज्ञात रहे कि जोरहाट में कतिपय विवाद के चलते कुछ मारवाड़ियों की दुकानों में तोड़ फोड़ की घटना के बाद स्थिति को नियंत्रित करने के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया था।

## "नया ज्ञानोदय" में प्रकाशित कहानी में 'मारवाड़ी' शब्द का प्रयोग आपत्तिजनक

भारतीय ज्ञानपीठ के प्रकाशन 'नया ज्ञानोदय' के मई २००६ के अंक में रमापद चौधुरी की एक बंगला कहानी 'चन्द्रभस्म' का हिन्दी रूपांतरण प्रकाशित किया गया है। हिन्दी में अनुवाद किया है उत्पल बनर्जी ने।

उक्त कहानी के एक प्रमुख चरित्र का नाम रखा गया है मूलचन्द मारवाड़ी। किसी चरित्र के नाम को जाति विशेष के साथ जोड़कर प्रस्तुत करना आपत्तिजनक है। इस कहानी में मूलचन्द मारवाड़ी को 'भिखारियों' का व्यापारी बताया गया है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन इस पर अपनी घोर आपत्ति एवं विरोध व्यक्त करता है।

50-60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700001

Ph : 033-2242-2585/4654 55252587
E-mail rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR

Sanitation & Plumbing Systems
Agricultural PIPES & FITTINGS

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

सम्पादकीय

# सम्मेलन के 'स्वधर्म' का मूल्यांकन

नन्द किशोर जालान
निवर्तमान अध्यक्ष

स्वधर्म का ज्ञान और तदनुवर्ती आचरण ही समस्त सांख्ययोग तथा कर्मयोग की भूमिका है, यह गीता की प्रमुख स्थापनाओं में से एक है।

स्वधर्म शब्द पूर्व-पद-प्रधान है। इसमें 'धर्म' की बाह्य मर्यादा 'स्व' की आभ्यन्तर प्रेरणाओं से ही निर्धारित और नियंत्रित होती है। इसका 'स्व' एक प्रकृत और उन्मुक्त सत्य है, 'धर्म' उस सत्य के श्रेयस्कर प्रयोगों की दिशा।

सम्मेलन का भी अपना एक 'स्वधर्म' है। यह मारवाड़ी समाज के द्वारा संचालित है, अतीत के गौरवपूर्ण चित्रों को देश के सम्मुख सविनय उपस्थित करना, उसकी वर्तमान प्रवृत्तियों को राष्ट्रीय नव-निर्माण के पावन अनुष्ठान में सम्मानित स्थान देने के लिए साग्रह प्रेरित करते रहना, और उसकी भविष्यत उपलब्धियों की दिशा अखिल भारतीय उत्कर्ष के लक्ष्य की ओर संवेग मुड़ती चली जाये, इसके लिए अनवरत जागरूकता रखना।

मारवाड़ी समाज के बाहर और भीतर भी अनेक व्यक्तियों ने बार बार पूछा है, और आज भी पूछते हैं कि इस वर्तमान गणतंत्री, धर्म निरपेक्ष, समाजवादी भारत में मारवाड़ी सम्मेलन जैसी एक संस्था के अस्तित्व का औचित्य क्या है और इसके माध्यम से मारवाड़ी समाज अपना अथवा देश की क्या और कितनी सेवा कर सकेगा?

इन प्रश्नों के समीचीन उत्तर के लिए दो समीक्षाओं में उतरने की आवश्यकता है- पहली समीक्षा भारत की उस विशेषता की, जिसने आदिकाल से ही इसे अनेकता में एकता की भूमि बनने का गौरव दिया है, और दूसरी मारवाड़ी समाज की उस वृत्ति की जिसके कारण यह समाज देश के अनेक अंचलों में बिखर कर रहता हुआ भी अपनी इकाई को जीवित और जाग्रत रख सका है और उसे देश की इकाई के साथ अधिक से अधिक संयोजित करने का इच्छुक रहा है।

भारत का समग्र इतिहास उसकी इस विशेषता का साक्षी है कि उसने सदा से ही एकता की साधना अनेकता के माध्यम से की है। उसने अनेकता को केवल मानवता का चिरंतन सत्य ही नहीं माना है, वरन् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका सगर्व अभिनन्दन भी किया है।

इस प्राचीन दर्शन का गंभीर और व्यापक प्रभाव भारत के जीवन पर है इसका प्रखर प्रमाण है वर्तमान भारतीय संविधान। इस भारतीय संविधान की आत्मा देश की अनेकता को सींचती रहकर उसमें एकता के फूल उगाती है, अनेकता की रंगीनियों का इन्द्रधनुषी चित्र खड़ा करती है। इस संविधान को सक्रिय और सार्थक बनाने में मारवाड़ी समाज का सर्वोत्तम अवदान हो सकता है वह यही कि वह अपने को देश की क्यारी का एक सुगंधमय फूल, सुन्दर रेखा बना दे।

मारवाड़ी समाज का स्वधर्म वाणिज्य और उद्योग कहे गये हैं। किन्तु वाणिज्य और उद्योग तो वास्तव में केवल उसकी जीविका के आधार हैं, उसके जीवन का धर्म नहीं है। आधार को ही धर्म समझ लिया जाना एक घातक भ्रम सिद्ध हो सकता है।

सूक्ष्मता से देखा जाय तो मारवाड़ी समाज का पहला स्वधर्म इसके उत्पत्ति काल से ही रहा है। पुरुषार्थ पूर्वक अपनी नागरिकता का अधिक सेअधिक प्रसार और उसके द्वारा अपने जीवन के उपयोग का यथा संभव विस्तार।' इसके इसी स्वधर्म ने इसे अपनी जन्मभूमि की सुरक्षितता छोड़ कर दूर-दूर जा प्रवासी बनने के लिए प्रेरित किया, और इसी ने इसे उन सभी प्रवास भूमियों को अपनी निवास भूमि बना लेने और अपनी यथाशक्ति सेवाओं से उन्हें स्वानुकूल बना डालने की शक्ति दी। इस समाज का अद्यावधि इतिहास मूलतः इसके इसी स्वधर्म के चेतन अथवा अचेतन पालन का इतिहास है।

यह समाज शताब्दियों से नागरिकता के विस्तार के अपने स्वधर्म पर चलता हुआ आज स्वयं एक ऐसे बिन्दु पर आ पहुंचा है, जहां देश की भावात्मक एकता प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, इसके अपने ही अस्तित्व के उत्कर्ष की एक आवश्यक और अनिवार्य पृष्ठ भूमि बन गई है। इसके स्वधर्म और भावात्मक एकता के संदर्भ में आज एक अदभुत तादात्म्य आ गया है।

मारवाड़ी समाज का दूसरा स्वधर्म रहा है अगम्यता तक पहुंच पाने और उसे सुगम बना देने के लिए सदा सर्वत्र नये पथ ढूंढ निकालने का या उसका निर्माण कर डालने का। आज देश को एकता, शांति और समृद्धि के दुर्गम लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए नये पथों की आवश्यकता है। इन पथों के अनुसंधान और निर्माण इन दोनों में ही यह समाज अग्रणी बन सकता है, यदि यह अपने स्वधर्म पर श्रद्धा रखकर उस पर चलता ही चला जाय।

यह समाज स्वधर्म जात अपनी उत्पत्ति की परंपरा को ही अपने उत्कर्ष की परंपरा भी बना सके और देश के मंच पर अपनी इस ऐतिहासिक भूमिका को सफलतापूर्वक निभाता हुआ देश को उतरोत्तर उठाता हुआ स्वयं भी उठता चला जाय, इसके लिए आज भी आवश्यक है यथेष्ट आत्मबोध और आत्म शोध की, अपनी अनेक आंतरिक विषमताओं और विडम्बनाओं से मुक्त होने की, युगोचित अनेक चेतनाओं और अनुभूतियों का संग्रह करने की, और इसे आवश्यकता है उन आँखों से भविष्य के इतिहास को देख सकने की, जिन आँखों से अर्जुन ने गीता के काल पुरुष को देखा था, और उसके आदेश को समझ कर अर्जुन के शब्दों में ही संकल्प ग्रहण करने की "करिष्ये वचनं तव।" किन्तु इसके लिए आवश्यक है बौद्धिक आत्म निर्माण व भावनात्मक आत्म सज्जा की। इसका एक माध्यम है- सम्मेलन समस्त देश के उत्कर्ष का एक उचित यंत्र बन सके, यही है सम्मेलन के अस्तित्व का सबसे बड़ा औचित्य। यही होगी सम्मेलन की सबसे बड़ी सेवा।

अपने इस स्वधर्म के पालन में सम्मेलन को अभी तक कितनी सफलता मिली है या भविष्य में मिलेगी, उसके मूल्यांकन के अधिकारी आप सब ही हैं और रहेंगे।

*With Best Compliments From :*

# Mironda Trade & Commerce Pvt. Ltd.
# Malvika Commercial Pvt. Ltd.
# Mercury International
# Touchstone Exports

Tower House, 2A Chowringhee Square,
Kolkata - 700069, India.

Phone : (91-33) 2248-3789/2210-8543
2242-9002

Fax : (033) 2248-2856

E-mail : mercintl@yahoo.com

Website : www.touchstoneexports.com

# अध्यक्ष की कलम से

## मोहनलाल तुलस्यान

*कोई भी धर्म हो, उनके कट्टरपन को लेकर गर्व करने के बराबर मनुष्य के लिए लज्जा की बात, इतनी बड़ी बर्बरता और दूसरी नहीं है।*

*-शरतचन्द्र*

अफगानिस्तान में तालिबानियों ने भारतीय इंजीनियर के. सूर्यनारायण को अगवा कर लिया और बाद में रिहाई की किसी भी बातचीत की प्रक्रिया के शुरू होने से पहले ही उसकी हत्या कर दी। इससे पहले भी वे एक ड्राइवर मनिअप्पन आर. कुट्टी की भी हत्या कर चुके हैं।

तालिबानियों का गुस्सा भारतीयों पर है क्योंकि भारतीय विशेषकर हिन्दू अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। तालिबानी चाहते हैं कि सभी भारतीय जो अफगानिस्तान में हैं, वहां से भारत लौट जाएं।

जैसा कि हम जानते हैं कि तालिबान का मतलब इस्लाम का कट्टर अनुयायी है जो सिर्फ इस्लाम धर्म की रीतियों-नीतियों पर ही अमल करता है। हालांकि यह कहना ज्यादा प्रासंगिक है कि तालिबानियों की अपनी रीति-नीति है जिसमें वे हर उस व्यक्ति को मौत के घाट उतार देते हैं जो उनकी खिलाफत करता है या उनकी शर्तों को पूरा नहीं करता। पिछले डेढ़ दशक में तालिबानी हजारों बेगुनाह इस्लाम धर्म के मानने वालों की भी हत्या सिर्फ इसलिए कर चुके हैं कि उन्हें उनके आचरण पर संदेह था। धर्म के कट्टरपन का यह बर्बरतम रूप है जिसमें विकास की प्रक्रिया को भी धर्म की तुला पर तौल कर देखा जा रहा है।

वस्तुत: धर्मों के बीच हिंसा पिछले वर्षों में तेजी से बढ़ी है। बहुत सुनियोजित तरीके से विभिन्न धर्मों के बीच टकराव को बढ़ावा दिया जा रहा है और पूरी दुनिया को अशांत करने की घृणित साजिश रची जा रही है।

कभी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि 'हमें अपने मस्तिष्क में तथा लोगों के मस्तिष्क में यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर देनी चाहिये कि सम्प्रदाय के रूप में धर्म और राजनीति का गठबंधन सबसे ज्यादा खतरनाक गठबंधन है।' आज इस उक्ति को सत्य के रूप में सर्वत्र घटित होते देख रहे हैं। धर्म चूंकि मनुष्य की आस्था से जुड़ा हुआ है इसलिए राजनीति अपने प्रचार-प्रसार के लिए धर्म का दुरुपयोग करती है। आम आदमी धर्म के प्रति अपनी कमजोरियों के चलते राजनीति की दुरभिसंधि का शिकार होता जाता है।

मेरा यह मानना रहा है कि 'लड़ाई-झगड़ा, वाद-विवाद और होड़ा-होड़ी करके चाहे जो चीज मिल जाए पर धर्म जैसी चीज नहीं मिल सकती क्योंकि धर्म नितांत व्यक्तिगत भावना की चीज है और प्रत्येक मनुष्य को यह अधिकार मिलना चाहिए कि वह अपने धर्म के मानने, न मानने के विषय में स्वतंत्र रहे। लेकिन धर्म के ठेकेदार ऐसा नहीं मानते और न ही राजनीति से जुड़े लोग धर्म-आधारित राजनीति से पृथक कुछ सोचने का जहमत उठाना चाहते हैं।

धर्म और राजनीति का यह मेल इतना घातक होता जा रहा है कि राष्ट्रों और समुदायों की तो बात ही छोड़िये, घरों तक में मतभेद की स्थिति आ रही है। एक ही घर में दो भिन्न राजनीतिक विचारधारा के सदस्य हों, तो बात उनकी नहीं खलती, लेकिन यदि वैचारिक मतभेद का यह मुद्दा उनके संबंधों को कटु से कटुतर बनाए, अलग-अलग घर बसाने की परिस्थिति का निर्माण करे तो संकीर्णता भरी मानसिकता पर रोना आता है।

आज यही सर्वत्र हो रहा है और इसके परिणामस्वरूप कलह का सूत्रपात भी हो रहा है। मानसिक शांति लुप्त हो रही है। भले ही धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यक्रमों की संख्या दिनोंदिन बढ़ रही हों, टीवी चैनेलों में धर्म आधारित कार्यक्रम एक आवश्यकता बन रही हो, लेकिन उसका मनुष्य पर प्रभाव नगण्य है। लोग गंभीरता से धर्म और अध्यात्म पर चिन्तन नहीं करके सिर्फ दिखावे के लिए इसका सहारा लेते हैं। धर्म की मूलभूत बातों को जीवन में उतारने की ओर किसी का ध्यान नहीं है, अपितु खोखली जीवनधारा में धर्म का आवरण चढ़ाकर लोग स्वयं को पूजवाना चाहते हैं।

जब तक यह प्रवृत्ति रहेगी, धर्म के प्रति कट्टरपन का रुख रहेगा तब तक हिंसा और वैमनस्य मुक्त समाज की कल्पना हम नहीं कर सकते और जब तक हिंसा और वैमनस्य से हमारा परिवार, समाज और राष्ट्र मुक्त नहीं हो जाता तब तक शांति, सौहार्द्र और भाईचारे की बात बेमानी है।

आइए, हम शांति, सौहार्द्र और बन्धुत्व की स्थापना के लिए नई पहल को उद्यत हों।

# समृद्ध परम्परा है राजस्थानी संस्कृति की

-दीपचन्द नाहटा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.मा. सम्मेलन

राजस्थान केवल किसी भूखण्ड का नाम मात्र नहीं है। यह भारत की एक अखंड ईकाई है जिसके नाम के साथ अनेक संभावनाएं जुड़ी हुई हैं। इस संदर्भ को चेतना में रखते हुए हम राजस्थान दिवस यहां मनाते हैं। विश्व में जब तक शौर्य का ही नहीं, सिद्धान्त प्रतिपादित चारित्रिक मानवी त्याग और बलिदानमय शौर्य का सम्मान रहेगा तब तक राजस्थान का नाम सर्वोपरि रहेगा। किसी समय सरस्वती नदी राजस्थान में बहा करती थी और इसी के किनारों पर ऋषि-मुनियों ने वेद, उपनिषद आदि की रचना की। हमारा अतीत समुज्जवल है, प्रेरक है। राजस्थान पर प्रत्येक भारतवासी गौरवान्वित है, हर्षित है। केवल भारतवासी ही क्यों विश्व का कोई भी स्वतंत्रता प्रेमी राजस्थान के गौरवमय इतिहास को जब भी पढ़ेगा, वह रोमांचित होगा, विस्मित होगा और श्रद्धा से नतमस्तक होगा।

जिस प्रकार राजस्थान सामंती युग में अग्रणी था, उसी प्रकार यहां के निवासियों ने राजस्थान से दूर अन्य प्रान्तों, राज्यों व अंचलों में जाकर वहां के औद्योगिकरण में सक्रिय सहयोग देकर, राष्ट्र की समृद्धि में योगदान किया है। केवल उद्योग-व्यवसाय ही राजस्थानी जीवन की सम्पूर्णता नहीं है। वह तो जीवन का एक अंग है। शिक्षा, संस्कृति, धर्म, नैतिकता, उदारता और दानशीलता भी राजस्थानी के जीवन का एक अंग है। हम राजस्थानवासी इन परम्पराओं को संभाले रखें, इन परम्पराओं के कार्यों में और अधिक संख्या में लोग अपना योगदान दें। इसी परम्परा को अधिक विकसित करने की दृष्टि से राजस्थान फाउंडेशन अपने पुरस्कार समारोह एवं अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से इस शुभ कार्य में अबाध गति से विकास की ओर उन्मुख है। भारत का कोई भी राज्य ऐसा नहीं है, जहां राजस्थान की उदारता, दानशीलता, परोपकार, समाजसेवा के गौरव के कीर्तिमान न हों।

राजस्थान का भूखंड विशाल है। धरती उर्वरा है। खनिज पदार्थों से भरी हमारी धरती 'वसुंधरा' है। केवल वीर प्रसविनी ही नहीं, संतों, भक्तों, उद्योगवीरों के रूप में भी वह प्रकट हुई है। राजस्थान के उद्योगवीर देश एवं देश के बाहर नये-नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं- वे भी राजस्थान के औद्योगिक विकास में अपना योगदान दें साथ ही राजस्थान की सांस्कृतिक सम्पदाओं की रक्षा करते हुए हम भारतवर्ष एवं राजस्थान के विकास के लिए विज्ञान की नयी प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करें।

राजस्थान के निवासी देश के सभी अंचलों में बसे हुए हैं। राजस्थानवासी सभी जगह सभी सम्प्रदाय के लोगों के साथ दूध और चीनी की तरह घुल-मिल कर रहते हैं। राजस्थान में उद्योग के विस्तार की अत्यधिक संभावनाएं हैं। कोटा, बीकानेर, उदयपुर, अलवर, बूंदी, झालावाड़, सवाई माधोपुर, बारा, भिलवाड़ा आदि स्थानों पर धनिया, चावल, सरसों, चना, सोयाबीन आदि फसलें प्रचुर मात्रा में पैदा होती है। जिस गति से कोटा एवं उसके आसपास के इलाकों में कृषि एवं खनिज पर निर्भर पदार्थों का उत्पादन बढ़ता जा रहा है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि कोटा राजस्थान का मुख्य व्यवसाय केन्द्र बनकर राजस्थान के औद्योगिक विकास में प्रमुख भूमिका अदा करेगा। मारबल, ग्रेनाइट, कोटा स्टोन, सोप स्टोन, काली मिट्टी आदि खनिज पदार्थ और पत्थर उपरोक्त स्थानों पर जमीन के अन्दर अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। इनकी सारे देश में खपत होती है। कोटा, जयपुर, बीकानेर, सरदारशहर आदि शहरों में विश्वविद्यालय एवं तकनीकी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना से शिक्षा के विकास में भी राजस्थान द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है। राजस्थान के पर्यटन स्थल जैसे मरुभूमि, झील, रणकपुर के सदृश्य अप्रतिम मन्दिर, टीला एवं चित्तौड़गढ का प्रसिद्ध किला आदि विदेशी सैलानियों एवं पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जो भी पर्यटक यहां आते हैं वे राजस्थान के विभिन्न रंगों को देखकर अत्यन्त आकर्षित होते हैं। आज के संदर्भ में आवश्यकता इस बात की है कि राज्य में पर्यटन स्थलों, शिक्षण संस्थानों, कृषि और उद्योगों को और अधिक प्रोत्साहन दिया जाएं जिससे राजस्थान शैक्षणिक और औद्योगिक दृष्टिकोण से और अधिक विकसित हो सके। भारतवर्ष, राजस्थान एवं विश्व के कल्याण के लिए राजस्थान के वीर सपूतों को आगे आना है। कारण, राजस्थान के पास एक ओर सिद्धान्तप्रियता है तो दूसरी ओर औद्योगिक प्रतिभा है। आज के संदर्भ में दोनों की आवश्यकता है। हम राजस्थान दिवस के इस ऐतिहासिक सुअवसर पर आत्मनिरीक्षण करें। नये युग के अनुसार नये अस्त्रों से अपने को सज्जित करें, सेवा के कंटीले मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प करें। देश के विकास में अपना योगदान दें।

## मत पीटै नित ढोल

तू थरी करणी रा खुद ही
मत पीटै नित ढोल।
करम अकारथ कद जावै
धरती रै कण-कण बोलै,
तपसी री चिर-मून पढ़यै
भरमां रा पड़दा खोलै
लाग्यो रै तू थारै किरतब
जण खुद करसी मोल।
बडबोलो बण, बोल बावला
के दुनिया सूं पासी?
थारै जस री भूख सांच में
बैठी भरम रलासी,
भरै क'णा खाली मनस्या सूं
आ सुपना री खोल?
निसचै निज हिम्मत परवाणै
आगै बधतो जावै
संका निज रै मारग री
जग-भर सूं साख भरावै,
कुण सौ झाल्यो हाथ, देखलै
एक'र आंख्यां खोल।

-सीताराम महर्षि
रतनगढ़

# प्रत्येक बंगाली टैगोर या अमर्त्य सेन नहीं होता न ही सभी मारवाड़ी बिड़ला-बांगड़ हैं !

सीताराम शर्मा
उपाध्यक्ष- अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

एक ऐसे देश एवं समाज में जहां प्रत्येक जाति वर्ग को एक रंग विशेष में प्रस्तुत किया जाता रहा है, जहां प्रत्येक बंगाली बुद्धिजीवी होता है, हर बिहारी मूर्ख एवं गंवार, प्रत्येक गुजराती कंजूस, हर सिंधी एक तस्कर और प्रत्येक मारवाड़ी पैसेवाला, वहां धारणा एवं सच्चाई में फर्क करना मुश्किल हो जाता है।

राजस्थान, हरियाणा एवं मालवा से उठकर देश के कोने-कोने में बसा प्रवासी मारवाड़ी समाज अपनी सही तस्वीर एवं सही पहचान की लड़ाई लड़ रहा है। यह एक कटु सत्य है कि स्वतंत्रता के पश्चात मारवाड़ी समाज को विभिन्न प्रांतों में जितने जातिगत आक्रमण, अत्याचार एवं अपमान का सामना करना पड़ा है उतना किसी भी अन्य समाज को नहीं। आज भी 'प्रवासी मारवाड़ी' समाज के लिये सुरक्षा एक बड़ा प्रश्न है। इसके लिये क्या और कौन जिम्मेवार है- आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था, प्रशासन या स्वयं हमारा समाज ?

ईमानदारी से आत्म-विश्लेषण एवं चर्चा करें तो पायेंगे कि कहीं न कहीं तीनों ही दायी हैं।

एक ऐसी धारणा बन गयी है कि मारवाड़ी का अर्थ ही पैसा है। क्या हमारे समाज के सभी लोग धनी हैं? जैसे प्रत्येक बंगाली रवीन्द्रनाथ टैगोर या नोबल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन नहीं होता, उसी तरह सभी मारवाड़ी बिड़ला-बांगड़ नहीं है। हर मारवाड़ी पैसे वाला है- यह छवि हमारे समाज का सही प्रतिनिधित्व नहीं करती। लेकिन समाज की ऐसी तस्वीर बनी कैसे और किसने बनाई ?

समाज के कुछ मुट्ठी भर लोगों के पास अपार धन-दौलत है। यह भी सही है कि मारवाड़ी समाज मुख्यतया एक व्यावसायिक समाज है तथा देश के व्यापार एवं उद्योग में उसका एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है, लेकिन हमारे समाज के सभी लोग धनी नहीं हैं, समाज में अन्य समाजों की तरह बेरोजगारी एवं गरीबी भी है।

धनोपार्जन पाप नहीं है। लेकिन धन-वैभव का दिखावा पाप है। आडम्बर एवं दिखावे ने हमारे समाज की छवि को कलुषित एवं खंडित किया है। धन समाज पर इतना हावी हो गया है कि हमारा जीवन, जीवन के मूल्य एवं आदर्श, आपसी संबंध एवं रिश्ते सभी अर्थ केन्द्रित हो गये हैं। धन की इस महत्ता ने न सिर्फ मारवाड़ी समाज की छवि को बिगाड़ा है बल्कि पूर्वजों द्वारा प्रदत्त समाज की प्राय: सभी खूबियों को लुप्तप्राय कर दिया है। एक तरफ दिखावा एवं आडम्बर हमें अन्य समाजों की नजर में ईर्ष्या का पात्र बनाता है तो दूसरी तरफ बढ़ते दिखावे ने समाज के मध्यमवर्ग को खोखला कर दिया है। सब कुछ दिखावा बनकर रह गया है। असली नकली का फर्क नहीं रह गया है।

आज हम इतर समाज की ईर्ष्या, घृणा, आक्रमण एवं अत्याचार के लक्ष्य हैं इसके लिये हमारी अर्थ केन्द्रित सोच एवं दिखावा-आडम्बर दायी है। हमने हर चीज को पैसे के तराजू से तौलना सीख लिया है। धनी रिश्तेदार को गले लगाते हैं तथा गरीब रिश्तेदार से परहेज। समाज में ज्ञान, कला, साहित्य, संस्कृति से अधिक महत्व धन का है। पैसा कमाना सर्वोपरि है- सफलता का एकमात्र मापदंड धन रह गया है। आपने कैसे पैसा कमाया यह मायने नहीं रखता, महत्वपूर्ण धनोपार्जन है।

धन की महत्ता ने न सिर्फ हमें औरों की नजरों में गिराया है, बल्कि हमारे आदर्शों पर आधारित पारिवारिक परम्पराओं को भी नेस्तनाबूद कर दिया है। ''बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया'' की कहावत देश के सबसे धनिक समाजों में एक मारवाड़ी समाज पर आज सबसे ज्यादा लागू होती है। पैसा जो कभी संयुक्त परिवार की ताकत होता था आज सबसे बड़ा श्राप बन गया है। भाई-भाई तो छोड़िये, बाप-बेटे के बीच बंटवारे की बात आज चौंकाती नहीं है- क्योंकि बात अब बंटवारा नहीं दुश्मनी के कगार तक पहुंच गयी है जिसमें यहां तक कि एक दूसरे के यहां मरने-जीने में जाने का संबंध भी नहीं रहता। कहीं कोई भूकम्प नहीं आता, समाज सामान्य रूप से समर्पण के भाव से सब स्वीकार कर रहा दिखता है।

अगर मारवाड़ी समाज अपनी तस्वीर को सुधारना चाहता है तो समाज को धनोपार्जन करने के साथ-साथ जीवन में धन की महत्ता को कम करना होगा। समाज में शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान, खेल-कूद आदि क्षेत्रों में स्थापित व्यक्तियों को प्रोत्साहित, सम्मानित एवं प्रतिष्ठित करना होगा। आडम्बर एवं दिखावा पर समाज को अंकुश लगाना होगा। येन-केन-प्रकारेण धन कमाने की प्रवृत्ति को त्यागना होगा। हमें धन कमाना है, लेकिन प्रतिष्ठा के साथ।

# संस्कार

– प्रकाश चन्द्र अग्रवाल
(सम्पादक, दैनिक विश्वमित्र)

एक राजा के यहां बड़ी सुन्दर और सुशील घोड़ी थी। कई बार युद्ध में इस घोड़ी ने राजा के प्राण बचाए थे। कुछ दिन बाद घोड़ी को एक बच्चा पैदा हुआ, परन्तु बच्चा काना था। एक दिन बच्चे ने अपनी मां से पूछा कि मेरा सारा शरीर सुडौल है, परन्तु मेरी एक आंख क्यों नहीं है, मुझे बड़ी लज्जा आती है। घोड़ी ने कहा कि बेटा एक दिन राजा मुझ पर सवार होकर टहलने जा रहे थे और तू गर्भ में था। राजा ने मेरी कोख पर एक हंटर मार दिया, जिसका असर गर्भ पर पहुंचा और तू काना जन्मा।

यह बात माता के मुख से सुनकर बच्चे ने कहा कि माता, मैं राजा से इसका बदला लूंगा। कभी युद्ध में राजा को शत्रु के हाथ फंसा कर मरवा दूंगा। घोड़ी अपने पुत्र की यह बात सुन घृणा से कहने लगी कि बेटा, तू बड़ा कृतघ्नी है। मेरी कोख को कलंकित करना चाहता है। जिस राजा ने हमें पाला-पोषा, भांति-भांति के चारा-दाना खिलाया, उसे एक बार क्रोध आ गया और उससे कुछ हमारा नुकसान हो गया तो क्या उसकी जान के ग्राहक बने। घोड़ी ने इसी भांति नाना प्रकार से बच्चे को समझाया, परन्तु वह राजा को कष्ट पहुंचाने की जिद पर डटा रहा। जब वह बच्चा घोड़ा हुआ और राजा की सवारी में आया तब वह मन ही मन बदले की प्रतीक्षा करता रहा। एक समय राजा उसी घोड़े पर चढ़ युद्ध को चले तब घोड़ा बदले का समय आया जान बहुत प्रसन्न हुआ। मन ही मन सोचता जाता था कि आज राजा को युद्ध में फंसाकर आंख का बदला लूंगा। जब राजा युद्ध में पहुंचा और शत्रु से भिड़ गया तो घोड़े ने बड़ी वीरता दिखाई, राजा शत्रु के प्रहार से मूर्छित हो गिरने को ही था कि घोड़ा राजा को ले भागा। राजमहल पहुंचने पर घोड़ी ने पूछा- बेटा, कहो युद्ध कैसा रहा। घोड़े ने युद्ध की सब कथा सुनाई। माता ने कहा- क्या तूने राजा से अपना बदला लिया? घोड़े ने कहा- माता, मैं बदला कैसे लेता, मुझे तो उस समय यश की चाह से केवल शत्रु को परास्त करने की सूझता था। माता ने कहा- बेटा, मुझे मालूम था तुम ऐसा नहीं कर सकते। क्योंकि तू नस्ल में अच्छा है और फिर तेरी मां भी तो नमक हलाल है। जिनकी माताएं उत्तम संस्कार डालती हैं वे संतान कभी पाप नहीं कर सकती। यदि क्रोधवश कभी पाप का इरादा भी करे, तब भी अपयश के भय से वे पापाचरण में लज्जा करेंगे।

माता और पिता दोनों संतान के जन्मदाता हैं। किन्तु संतान में अच्छे संस्कार डालने का काम माता जितने कारगर ढंग से करती है, पिता उतना नहीं कर सकता। पश्चिमी सभ्यता, भौतिकवाद की बुराइयां आज जीवन में घर करती जा रही हैं। ऐसे समय में आज की माताओं को इस कहानी से सीख लेनी चाहिए। उन्हें अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालना चाहिए। बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो, वे बड़े होकर देश और समाज को आगे बढ़ाने का काम कर सकें, इसके लिए उपर्युक्त कहानी से शिक्षा ग्रहण कर अपने बच्चों का भविष्य बनाने का कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए।

# संगठन ही शक्ति है

*रतनलाल राठी, हैदराबाद*

मारवाड़ी समाज एक गौरवमय नाम है जिसकी समृद्धि, संस्कृति रही है। जिसका मूलस्थान मारवाड़ है लेकिन व्यवहार में जिसने समग्र राष्ट्र को अपना समझा, उसके सामाजिक, आर्थिक विकास को नई गति दी। आज तो मारवड़ी शब्द औद्योगिक, साहस, चातुर्य, दूरदर्शिता कठिन परिश्रम का पर्याय बन गया है। राष्ट्र का कौन सा ऐसा भाग है जहां पर इस समाज की छाप न पड़ी हो। राष्ट्र के विकास का प्रश्न हो या जन कल्याण का हर कहीं इस समाज की नम्र प्रयास की कीर्ति पताका फहरा रही है। छोटी-छोटी गद्दियों एवम् दुकानों से प्रारंभ की गई इनकी यात्रा आज वातानुकूलित कार्यालयों तक पहुंच गई है। इस यात्रा में कई पड़ाव व उतार-चढ़ाव रहे जिनका अपना अलग इतिहास है।

राष्ट्र के निजी क्षेत्र में ४० प्रतिशत से अधिक योगदान देने वाला मारवाड़ी समाज अपने सेवा भाव के लिए प्रारंभ से ही विनम्र प्रयास करता रहा है। तभी तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि 'मैं इस बात से अवगत हूं कि यह समाज कमाना भी जानता है तो उदारता से दान करना भी'। देश के प्रत्येक भाग में बिना किसी भेदभाव के जनकल्याणें केन्द्रों का निर्माण कराया। चाहे सरस्वती आराधना के मंदिर हो या पूजा स्थल, कला साहित्य केन्द्र हो या चिकित्सा केन्द्र सभी इस समाज की उदार वृत्तियों के परिचायक हैं। आजादी के विभिन्न आन्दोलनों के आर्थिक सम्बल प्रारंभ से ही प्रवासी मारवाड़ी रहे हैं जिन्होंने बापूजी एवम् अन्य नेताओं के इशारे पर अपने थैलियों के मुंह खोल दिए।

हमारे समाज ने जमनालाल बजाज जैसा राष्ट्र समर्पित नेता श्री लाला लाजपत राय, श्री बृजलाल बियाणी, श्री कृष्णदास जाजू, श्री ईश्वरदास जालन, श्री भंवरलाल सिंघी, श्री रामगोपाल माहेश्वरी, श्री नागरमल पेड़ीवाल आदि नेता दिए हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हमारा कोई अस्तित्व नहीं है। चाहे राज्य सरकार हो या केन्द्र अथवा समाज का अन्य वर्ग, इसका क्या कारण है? इस पर हमें गंभीरता से विचार करना होगा इसके लिए हमें संगठित होना होगा। एक सूत्र में बंधना होगा तभी हम कुछ कर सकेंगे। बिना संगठन के हम अपने को आगे नहीं बढ़ा सकते। यही मेरी सभी मारवड़ी भाइयों से विनीत प्रार्थन है कि संगठित हों।

आज समाज में कार्यकर्त्ताओं का नितान्त अभाव है या जो कार्यकर्त्ता है उनका समाज में पर्याप्त परिचय नहीं है या फिर हम योग्य कार्यकर्त्ताओं का यथोचित समादर करना नहीं जानते। संभवत: वर्तमान समय में तीनों ही बातें रही हों। आज की प्रवाहमानगति के साथ कार्यकर्त्ताओं का प्रवाह भी हमेशा चलता बढ़ता रहना चाहिए क्योंकि जहां पर प्रवाह और गति नहीं है वहां पर जड़ता आ जाती है। यदि समाज में कार्यकर्त्ता नहीं होंगे तो समाज निर्माण और विकास का क्रम निरन्तर अग्रसर नहीं हो पायेगा। सेवा, सुधार, संगठन की हमारी योजनाओं में अग्रगति नहीं आयेगी। आज समाज की सबसे बड़ी आवश्यकत है कि संगठन के सुदृढ़ बनाने के लिए कार्यकर्त्ताओं को पहचाने, उनका निर्माण करें उन्हें स्नेह और समादार दें। साधनों का योगदान भी। क्योंकि संगठन कार्यकर्त्ताओं से ही सुदृढ़ होता है। साधारण जनमानस को संगठन से जोड़ना होगा। नये कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा, प्रोत्साहन, समादर, उत्तरदायित्व देकर उनका विश्वास और उत्साह बढ़ाना होगा तभी संगठन सुदृढ़ और गतिशील बन सकेगा।

## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

# अखिल भारतीय समिति की बैठक : १३ जून २००६, नागपुर

## महामंत्री की रपट

**गत बैठक :**

अखिल भारतीय समिति की गत बैठक ११ सितम्बर २००५ को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में कोलकाता में सम्पन्न हुई। बैठक में राष्ट्रीय पदाधिकारियों के अतिरिक्त पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर, उत्कल प्रांतों से पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

**बैठकें :**

गत अखिल भारतीय समिति की बैठक के उपरान्त अब तक राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की ३ एवं स्थायी समिति की १ बैठकें सम्पन्न हुई है।

**वार्षिक साधारण सभा :**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा शनिवार २२ अक्टूबर २००५ को सम्मेलन भवन में हुई जिसमें सम्मेलन के वर्ष २००३-०४ एवं २००४-०५ के आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत एवं स्वीकृत किया गया।

**स्थापना दिवस समारोह :**

सम्मेलन का ७१वां स्थापना दिवस समारोह शनिवार २४ दिसम्बर २००५ की शाम् को कोलकाता के विद्या मंदिर सभागार में भव्य रूप से मनाया गया। इस अवसर पर सम्मेलन के पूर्व सभापति एवं सुप्रसिद्ध उद्योगपति पद्मभूषण श्री हरिशंकर सिंघानिया का सम्मान किया गया। समारोह में पश्चिम बंगाल सरकार के संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रबोध चन्द्र सिन्हा एवं नेपाल के कन्सुल जनरल श्री गोविन्द प्रसाद 'कुसुम' विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर 'नयी अर्थव्यवस्था, नये अवसर' विषय पर एक गोष्ठी भी की गयी।

विभिन्न प्रांतीय सम्मेलनों द्वारा भी इस अवसर पर स्थापना दिवस का पालन किया गया।

**प्रांतीय सम्मेलन:**

**पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** की ६ नवम्बर २००५ को जोरहाट में आयोजित प्रादेशिक सभा में श्री विजय कुमार मंगलूनिया को प्रांतीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

**झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन** का द्वितीय अधिवेशन १८ एवं १९ फरवरी २००६ को देवघर में धूमधाम से प्रांतीय सभापति श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन किया सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी ने एवं मुख्य अतिथि थे विधानसभा अध्यक्ष श्री इन्दर सिंह नामधारी। अधिवेशन में विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे।

**उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन** का दशम् अधिवेशन २६ मार्च २००६ को भुवनेश्वर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जहां प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र डालमिया ने पदभार ग्रहण किया एवं श्री शिवकुमार अग्रवाल महामंत्री निर्वाचित किये गये।

**महिला सम्मेलन :**

**अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन** का १२वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन ७-८ जनवरी २००६ को नागपुर में सफलतापूर्वक श्रीमती सावित्री देवी बाफना की अध्यक्षता में आयोजित हुआ।

**युवा मंच:**

**अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच** का अष्टम राष्ट्रीय अधिवेशन रायपुर (छत्तीसगढ़) में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुल्तानिया की अध्यक्षता में भव्य रूप से आयोजित किया गया।

अन्य प्रान्तों से विभिन्न कार्यक्रमों की रपटें बराबर प्राप्त होती रही है।

**दी राजस्थानी फाउण्डेशन :**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की लन्दन में सहयोगी संस्था 'दी राजस्थानी फाउण्डेशन' के नये पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। श्री गोकुल बिन्नानी अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

**समाज विकास :**

सम्मेलन के मुखपत्र समाज विकास की करीबन ८००० प्रतियां प्रत्येक माह पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान के सम्पादकत्व में प्रकाशित की जा रही है जिसमें सम्मेलन की गतिविधियों के अतिरिक्त सामाजिक प्रश्नों पर विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित किये जाते हैं।

**सम्मेलन डायरेक्टरी :**

सम्मेलन के आजीवन एवं साधारण सदस्यों की एक नयी उपयोगी डायरेक्टरी का प्रकाशन किया गया है जिसका विमोचन ७१वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर हुआ। डायरेक्टरी की निःशुल्क छपाई के लिए श्री प्रदीप ढेडिया के आभारी हैं।

# सतगुणी मारवाड़ी

*श्यामा जीवराजका, पटना*

यूं तो हर व्यक्ति को अपने स्वयं के समुदाय पर गर्व करना चाहिए और करता भी है, लेकिन हरेक मारवाड़ी को मारवाड़ी पर गर्व करने का विशेष अधिकार है। मारवाड़ी समुदाय अपने अनोखे गुणों के कारण, सभी समुदायों में अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं। इन गुणों को रेखांकित करने से न केवल वर्तमान पीढ़ी को अपने आप को पहचानने का अवसर मिलेगा बल्कि आगे आने वाली पीढ़ी में भी इन गुणों को विकसित करने का एक मसौदा तैयार हो सकता है। मारवाड़ी अनूठे गुणों की एक सतलड़ी है। यह सतलड़ी अंग्रेजी के सात अक्षरों से बनी है। एक-एक अक्षर मारवाड़ी के एक-एक गुणों के प्रदर्शित करत है।

अंग्रेजी के शब्द M से मारवाड़ी के लिए Mundane विशेषण का उपयोग होना चाहिए। इसका अर्थ है सांसारिक या वास्तवकिता से जुड़े रहने वाला। इसमें कोई शक नहीं है कि मारवाड़ी के पैर जमीन पर ही रहते हैं तथा वास्तविकता से बंधे रहते हैं। दुनियादारी का ज्ञान हरेक मारवाड़ी में जन्म से ही होता है।

मारवाड़ी शब्द में अंग्रेजी का दूसरा अक्षर है A । मारवाड़ी के लिए A से सही विशेषण Assiduous या Hard working है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि मारवाड़ी उद्यमी/परिश्रमी/मेहनती होते हैं। पूरे जीवन-भर मारवाड़ी अपने लिए अपने परिवार जनों तथा समाज के लिए कड़ी मेहनत करता है।

मारवाड़ी शब्द का तीसरा अक्षर है R । मारवाड़ी के लिए R से सही विशेषण Reverent उचित है। Reverent का भावार्थ है दूसरों के लिए आदर/आभार व श्रद्धा रखने वाला। प्रत्येक मारवाड़ी दूसरों के लिए चाहे वह ग्राहक हो या बुजुर्ग सभी को ईश्वर सा सम्मान देता है। दूसरों की उपेक्षा या खिल्ली उड़ाना मारवाड़ी का धर्म ही नहीं है।

मारवाड़ी शब्द में अंग्रेजी का चौथा अक्षर है W । मारवाड़ी के लिए W से सही विशेषण Wealth Creator या धन उपार्जित करनेवाला है। एक सही मारवाड़ी धन के संचय में/संग्रह में तथा उपार्जन में विश्वास रखता है। धन का अपव्यय या फिजूल खर्ची जैसे अवगुण मारवाड़ी में होते ही नहीं है।

अंग्रेजी में मारवाड़ी का पांचवा अक्षर है A। जिससे Achiever या हमेशा सफल होने का विशेषण मारवाड़ी के लिए सही है। व्यवसाय में तो मारवाड़ी सदा से ही Achiever रहे हैं। पिछले बीस सालों में शिक्षा, विज्ञान, टेक्नोलॅजी तथा खेलों में भी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। अत: मारवाड़ी और Achiever एक दूसरे के पर्याय हैं।

अंग्रेजी में मारवाड़ी का छठा अक्षर R है, जिससे Relation जैसे विशेषण का प्रयोग किया जा सकता है। इसका अर्थ है संबंधों को बढ़ाना, उन्हें मजबूत करना, एक से दूसरों को जोड़ना और उन संबंधों से नये संबंधों को जन्म देना। मारवाड़ी का व्यवहार इतना कोमल व हंसमुख होता है, जिस कारण उनके संबंध लम्बे समय तक कायम रहते हैं। संबंधों को संवारने, संभालने की कला तो कोई मारवाड़ी से सीखे।

अंग्रेजी में मारवाड़ी का आखिरी अक्षर है I , जिससे Intutive विशेषण बनता है। Intutive का अर्थ है छठी इन्द्रीय का बोध, पूर्वानुमान इत्यादि करने वाला। एक मारवाड़ी का बहुत पहले से ही अपने लक्ष्य तथा सही रास्ते का अनुभास हो जाता है। उसकी छठी इन्द्रि उसे आने वाले खतरे या होने वले लाभ के प्रति सतर्क रखती है। Formal Educaiton न होने पर भी अनुभव के बल पर ही बहुत बार मारवाड़ी ने कई बड़े-बड़े कार्य किये हैं तथा उसे उसमें सफलता भी मिली है।

अत: मारवाड़ी के गुणों की सतलड़ी इस प्रकार है-

M-Mundane या वास्तविकता से संबंध रखने वाला

A-Assiduous या कड़ी मेहनत करने वाला

R-Reverent या सम्मान/श्रद्धा देने वाला

W-Wealth Creator या धन उपार्जन करने वाला

A-Achiever या सफल रहने वाला

R-Relational या सामाजिक संबंध बनाने वाला

I-Intutive या छठी इन्द्री का उपयोग करने वाला।

जय मारवाड़ी। जय भारत।

## नव वर्ष की शुभकामनाएं

*-डा. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी, हल्दवानी*

नव वर्ष की शुभकामनाएं अपार
देते रहेंगे हम यही आपको बारम्बार
क्यों परेशान हो बेवजह
नववर्ष में बढ़ें आपके सभी 'सुख'
जमीन, चीनी और पेट्रोल की बढ़ती कीमतों की तरह।
घटें आपके सारे गम और 'दुख'
मल्लिका शेरावत और बिपाशा बसु ने पहने,
कम कपड़ों की तरह॥
चीनी और पेट्रोल पर छा गयी महंगाई।
तब 'गोल्डी' ने सरकार को फ्री की राय भी बताई॥
गरीबों ने शीत लहर में
बिना अलाव जलाये अपनी रात बितायी॥

# नेहरू परिवार- खेतड़ी राज- राजस्थान

-डा. मनोहरलाल गोयल, जमशेदपुर

वैसे तो नेहरू-गांधी परिवार राष्ट्र की धरोहर है और उसका देश के सभी भागों से संबंध हो सकता है। लेकिन राजस्थान से नेहरू परिवार का जो संबंध है, वह आत्मीय है और कुछ हद तक माँ के दूध से जुड़ा है। मोतीलाल नेहरू ने राजस्थान की एक महिला के स्तन का दूध पिया है। वे कई वर्ष तक राजस्थान के खेतड़ी में रहे हैं, जहां उनके अग्रज पं. नन्दलाल नेहरू खेतड़ी नरेश की सेवा में थे। दूध पिलानेवाली यह महिला लच्छीराम माली की पत्नी थी, जिसने मोतीलाल नेहरू का पालन-पोषण किया और धाय मां का दायित्व निभाया।

सन् १८६२ में नन्दलाल नेहरू तत्कालीन खेतड़ी नरेश फतहसिंह के निजी सचिव बनकर खेतड़ी आए। उन्होंने अपनी योग्यता से खेतड़ी की विभिन्न समस्याओं का समाधान किया और नरेश को अपने कामों से प्रभावित किया। नतीजा यह निकला कि वे राज्य के दीवान के पद तक पहुंचे। ३० नवम्बर १८७० को राजा फतह सिंह का निधन दिल्ली में हो गया, तब अंग्रेजों की कुदृष्टि से खेतड़ी को बचाने के लिए नन्दलाल जी ने काफी सूझबूझ से काम लिया और साहस दिखाते हुए पड़ोसी ठिकाने मलसीसर के ठाकुर के पुत्र अजीत सिंह को बुलवाकर खेतड़ी की राज गद्दी पर बैठा दिया। ब्रिटिश शासन के जयपुर में पद स्थापित रेजीडेंट ब्रेडफोर्ड ने आंखें तरेरी, लेकिन हुआ कुछ नहीं। नन्दलाल जी का निर्णय सही था और खेतड़ी को एक योग्य राजा मिला था। वह वही अजीत सिंह थे, जो स्वामी विवेकानन्द के सहयोगी के रूप में काफी चर्चित हुए थे। बाद में भी नौ वर्षों तक नन्दलाल जी अपनी कार्यकुशलता, योग्यता और क्षमता से खेतड़ी की शासन व्यवस्था सही ढंग से संभाली जिसकी प्रशंसा अंग्रेजी प्रशासकों तक ने की थी।

नन्दलालजी जब खेतड़ी आए तब उनकी माता और छोटा भाई मोतीलाल भी उनके साथ थे। मोतीलाल जी तब उनसे उम्र में १६ वर्ष छोटे थे, जहां रामजहल की दाई ने उनका पालन पोषण किया था। यह बात उस धाय को सदैव याद रही। उसी ने बताया था कि बहुत दिनों बाद जब नेहरू परिवार इलाहाबाद में रहने लगा था, तब एक बार राजाजी और रानी जी की सवारी प्रयाग पधारी तब मैं भी उनके साथ थी। नेहरू परिवार में उन्हें काफी मान-सम्मान मिला। वहां मोतीलाल जी की धर्मपत्नी भी थी, जिसने उक्त धाय मां को सास जैसा सम्मान दिया और गाड़ी में बैठाकर इलाहाबाद का भ्रमण कराया। इस मान सम्मान से उक्त धाय मां इतनी अधिक प्रभावित हुई कि उसके मुंह से राजस्थानी में निकल गया- 'मैं तो जाणै जीवती ही सुरग में पूंछगी छी।' स्वयम् पंडित जवाहरलाल नेहरू ने और उनकी बहन श्रीमती कृष्णा हथीसिंह ने अपनी-अपनी आत्मकथाओं में इस तथ्य का उल्लेख किया है कि उनके पिता का खेतड़ी में लालन-पालन होने के कारण ही उन पर राजशाही वातावरण का असर पड़ा और उन्हें ईसी जीवन जीने का संस्कार खेतड़ी राजघराने से ही प्राप्त हुआ।

यद्यपि नेहरू परिवार इलाहाबाद आ गया था, लेकिन उसका संबंध और सम्पर्क राजस्थान से बना रहा। नेहरू जी के स्वभाव में करारपन का कारण भी राजस्थान का दूध ही माना जाता है, जो मोतीलाल ने पिया था और दूध का असर तीन पीढ़ियों तक रहता है। जवाहर लाल नेहरू की जन्म पत्री खेतड़ी से ही राज पंडित रुड़मल शर्मा ने बनाकर भेजी थी। जवाहरलाल नेहरू को घुड़सवारी का शौक था, इसकी पूर्ति खेतड़ी नरेश ने इलाहाबाद के आनन्द भवन में घोड़े भिजवा कर की थी।

शायद यह बात कम ही लोगों को मालूम हो कि जवाहरलाल जी की पत्नी कमला नेहरू जयपुर के मोतीलाल अटल की प्रपौत्री थीं। उनकी ननिहाल अजमेर में थी। उनकी साली स्वरूपरानी और साढ़ू पी.एन. काटजू भी जयपुर से थे। जवाहरलाल जी का सर्वप्रथम आगमन राजस्थान में १९२९ में हुआ, जब वे अपने पिता मोतीलाल नेहरू के साथ पिलानी और पुष्कर की यात्रा पर आए। बाद में देश के प्रधानमंत्री बन जाने के बाद १९६३ में ब्रह्मांड किरण सम्मेलन का उद्घाटन करने जयपुर पधारे थे। इस बीच भी वे अनेकों बार राजस्थान आए। यहां के लोगों को और उनके कामों को देखकर प्रभावित भी हुए। सन् १९४५ में वे हीरालाल शास्त्री द्वारा निवाई में स्थापित वनस्थली विद्यापीठ गए तो उसे देखकर उनके मुंह से निकला था- 'काश, मैं छोटी लड़की होती, तो मुझे भी वनस्थली में पढ़ने का अवसर मिलता। राजस्थान में रेगिस्तान और पानी की कमी पर एक बार उन्होंने कहा था- मेरे मन में आता है, सम्पूर्ण अणुशक्ति को एक पेटी में बन्द करके ले जाऊं और उसे राजस्थान में बिखेर दूं ताकि वह नखलिस्तान बन जाए। आज राजस्थान में हरियाली बढ़ती जा रही है।

उनकी पुत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी राजस्थान को कभी भुलाया नहीं। बीकानेर के तत्कालीन राजा गंगासिंह ने भी अपने क्षेत्र को हरा-भरा देखने का सपना देखा था। गंगानहर उनका सपना और उन्हीं की देन थी। लेकिन देश की स्वाधीनता के बाद और देशी रियासतों के राजस्थान में विलय के बाद, गंगा नहर योजना को भारत सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। भाखरा बाँध और विशाल नहर योजनाओं को आगे बढ़ाया। गंगा नहर को इंदिरा गांधी नहर नाम दे दिया गया और बीकानेर क्षेत्र में गंगा का अवतरण करा दिया। इंदिरा जी अपनी मौसी स्वरूप रानी के साथ जयपुर में कुछ दिन रहीं थी और वनस्थली विद्यापीठ भी देखने गयी थी। अपने पिताश्री के साथ भी राजस्थान की यात्रा की। तीर्थराज पुष्कर में अपने पारिवारिक पण्डे की देखरेख में पूजा अर्चना की। प्रधानमंत्री बनने के बाद १८ जनवरी १९६७ को राज्य में सूखे की स्थिति का जायजा लेने राजस्थान पहुंची श्रीमती इंदिरा गांधी ने उदयपुर की एक जनसभा में कहा था- मैं मानती हूं कि भौगोलिक परिस्थितियों के कारण राजस्थान की अपनी समस्यायें हैं जिनका

समाधान ढूंढ़ना अकेले राज्य सरकार के बूते के बाहर है। लेकिन वे शायद यह नहीं जानती थी कि राजस्थान निवासी जीवट के कितने धनी हैं। जन सहयोग और सरकारी सहयोग से वर्तमान राजस्थान का रूप एकदम बदला हुआ है। नेहरू जी ने कभी अपने मन की बात कही थी, आज वह साकार होती दिख रही है। यहां के संसाधनों का भरपूर उपयोग हो रहा है और राज्य के लोगों के मन में नयी आशाओं ने जन्म लिया है। पंडित झाबरमल शर्मा ने अपनी पुस्तक 'नेहरू परिवार और राजस्थान' में नेहरू परिवार की तीन पीढ़ियों के राजस्थान से संबंध के बारे में विस्तार से लिखा है। इसका विमोचन अपने निवास स्थान पर करते हुए इंदिरा जी इन आत्मिक संबंधों को स्मरण कर बहुत ही भाव विह्वल हो गयी थीं। उन्हें राजस्थान की महिलाओं की ओढ़नियां तथा पुरुषों के साफों का रंग बिरंगापन देखकर सुख मिलता था। वे स्वयम् भी जब राजस्थान जाती थी तब सांगानेरी या बंगरू प्रिंट की साड़ी पहन कर आनंद का अनुभव करती थीं। राजस्थान आना जाना उनके पुत्र राजीव गांधी ने भी जारी रखा और पुत्र वधू सोनिया गांधी भी राजस्थानी वेशभूषा में कई बार खुद को सजा चुकी हैं। राजस्थान का रंग ऐसा है, जो एक बार चढ़ गया तो उतारे नहीं उतरता। एक बार तो उदयपुर के डबोक हवाई अड्डे से बिना कारों के काफिले और सरकारी ताम झाम के राजीव गांधी ऊबड़ खाबड़ रास्ता पार करते हुए रोबिया गांव में जा पहुंचे और भील समुदाय के लोगों से उनका हाल चाल पूछने लगे। उनकी यात्रा सैर सपाटे के लिए नहीं, लोगों का दुखदर्द जानने के लिए होती थी। सोनिया गांधी की तरह उनमें दिखावा नहीं, दर्द था। वे भी राजस्थान के स्थापत्य, कला कौशल, वेशभूषा और सांस्कृतिक धरोहर से काफी प्रभावित थे।

# दहेज लालसा ने कुतरा पवित्र विवाह

## वैवाहिक परिचय सम्मेलनों व सामूहिक विवाहों की सार्थकता

*ईश्वर चन्द जैन*
*टिटिलागढ़, उड़ीसा*

वसुंधरा धरती उस समय सचमुच वसुंधरा थी, जिस समय यत्र-तत्र-सर्वत्र पार्थिव रत्नों के साथ नर रत्न बिखरे पड़े थे। ऐसे नर रत्न जो परम सात्विक, शील संपन्न और सादगी के शिखर पर खड़े होकर संतोष की आभा बिखेर रहे थे। न इच्छा, न आकांक्षा, न भोग लालसा, न पदार्थ वासना, न किसी की शासना, न अपने-परायेपन की भावना, कल्पना से परे था वह सुखमय संसार, जिसमें था- सहज विराग और विशुद्ध प्रेम का पराग।

समय परिवर्तनशील है, उसका चक्र घूमता रहता है। समय ने करवट ली, प्रेम-सौहार्द घटने लगा और लालसा-वासना-कामना का कुहासा छाने लगा। छीना-झपटी बढ़ने लगी, संग्रह-भावना बल पकड़ने लगी, वासनाएं मचलने लगी।

मानव मन के अहंकार प्रदर्शन के भाव प्रबल वासनाएं, संस्कारहीन रूप रंग की आकांक्षाएं, धन-पदार्थ प्राप्ति की लालसाएं ऐसे रोगकीट हैं, जिन्होंने विवाह नामक सुन्दर पवित्र चौखट को कुतर डाला, उसकी सुन्दरता को नष्ट कर दिया, रह गया भिखमंगेपन का भद्दापन, मन की मलीनता का नंगा प्रदर्शन, न आदमी का मूल्य रहा न संस्कार संपन्नता का आंकलन। रह गया सिर्फ धन का विनिमय, रूप का व्यापार और स्वार्थी मानव के मन का भौंडा प्रदर्शन, दहेज के नाम पर हत्या का नंगा नाच। विवाह संबंध जो दो परिवारों को जोड़ने वाला परम पावन गोंद सदृश होता था, उसमें धन लालच का विष घोलकर उसे इतना चेपहीन बना दिया कि वह कभी भी बिखर जाए। आज बिखरते-टूटते रिश्तों के घाव रिस रहे हैं, बदबू फैला रहे हैं, समाज को रुग्ण बना रहे हैं, ऐसे समय में स्वस्थ चिन्तकों को झकझोर दिया सोचने के लिये, बाध्य कर दिया कुछ नए पथ का निर्माण करने के लिए, उसी का परिणाम है जगह-जगह पर समाज के कर्णधारों द्वारा आयोजित वैवाहिक परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाहों का समायोजन, जिसमें समाज को निजात मिले झूठे प्रदर्शनों से, बार-बार के देखने आने-जाने वाले धन लोलुप खरीददारों की विशाल कतार से, लड़के वाले होने की झूठी ठसक और जन्म से शिक्षा पर्यन्त हुए संपूर्ण खर्च को वसूलने वाले व्यापारियों से। स्वप्निल दुनिया में स्वप्न देखने वाले दो स्वप्न दर्शकों का स्नेह सूत्र में आबद्ध होना विवाह है। एक-दूसरे के हित-सुख में सहभागी बनने और एक-दूसरे के पूरक बन जीने का नाम है- विवाह। जिसमें होता है- पूर्ण समर्पण भाव, अटल विश्वास, देह संबंध से परे समाज की इकाई-परिवार संचालन का सात्विक भाव, परिवार की अखंड परम्परा का निर्वहन और वृद्ध पालकों व बालकों को समुचित सहयोग दान।

इस प्रकार के आयोजनों से हम अगर सुरक्षित लाभ लें तो सम्मेलनों की सार्थकता समझ में आती है। इस प्रकार के सार्थक आयोजन समाज के लिये शुभ संकेत प्रतीत हो रहे हैं, जिसमें न धन का भौंडा प्रदर्शन होता है, न लेन-देन की बाध्यता। न लंबे चौड़े भोज और न ही भोज में सैकड़ों आइटमों की भरमार। देश के अनेक भागों में समाज के अनेक सजग संस्थानें विवाह गंगा धारा को प्रदूषण मुक्त बनाने की बहुआयामी योजना को सफल बनाने में अहर्निश संलग्न हैं। उन्हें अनेकानेक साधुवाद।

समाज में वह दिन जश्न मनाने का होगा जिस दिन विवाह, चाह मुक्त सद्राह का प्रवाह बन समाज को पवित्रित करेगा, प्रेम पगे दो प्राणियों को व दो परिवारों को ही नहीं संपूर्ण प्राणी जगत को परित्राण देगा, करेगा आने वाली पीढ़ियों को संस्कार दान और आन-बान-शान पर कुर्बान होने का अवदान।

# कुछ तो बोलो जनमेजय

-बंशीलाल बाहेती

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था- कौरव-पांडव दोनों ही सब कुछ खो चुके थे- भगवान श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा द्वारा चलाए गए ब्रह्मास्त्र से उत्तरा के गर्भ में पल रहे शिशु की रक्षा के लिए अपने सुदर्शन चक्र का प्रयोग किया और इस प्रकार पाण्डवों की वंश-परम्परा को समाप्त होने से बचा लिया। यही शिशु परीक्षित के नाम से पांडव परिवार के यशस्वी सम्राट बने।

कहते हैं कि स्वजनों के विनाश से दुःखित महाराज युधिष्ठिर ने तीन अश्वमेध यज्ञ कर भगवान की आराधना व साधना की। स्वयं योगीराज श्रीकृष्ण तीनों यज्ञों में उपस्थित रहे। कई मास हस्तिनापुर रह कर वह पुनः अर्जुन के साथ द्वारका चले गए। अपनों के खोने का दुःख महाराज युधिष्ठिर को सदैव उद्वेलित करता रहा- उसी वेदना में वे अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए जन-जन के कल्याण में दत्तचित्त लगे रहे।

इसी स्थिति में महाभाग विदुरजी का अचानक हस्तिनापुर आगमन होता है- उनको देखकर महाराज युधिष्ठिर को बेहद सुखद अनुभूति होती है। उन्होंने सपरिवार विदुर जी का सादर अभिवादन किया। उन्होंने इन तमाम वर्षों में विदुरजी की जीवन चर्या व परिभ्रमण के अनुभवों के बारे में विस्तृत विवरण देने का आग्रह किया। महाराज युधिष्ठिर, द्वारका व वहां यदुवंशी स्वजनों के बावत जानने को विशेष उत्सुक थे। महाभाग विदुरजी ने बड़ी विनम्रता से सभी तीर्थों और यदुवंशियों के बावत जो कुछ उन्होंने देखा था वह सब बताया। किन्तु यदुवंश के विनाश की बात उन्होंने नहीं कही। कुछ दिन विदुर जी हस्तिनापुर में रहे। पांडवों ने उनका पितातुल्य सम्मान किया और सदैव उनकी सेवा में तत्पर रहे।

महाभाग विदुर तो साक्षात् धर्मराज थे, किन्तु माण्डव्य ऋषि के श्राप से कुछ समय के लिए उन्होंने मृत्युलोक में जन्म लिया था। एक दिन अवसर मिलने पर उन्होंने अपने बड़े भाई धृतराष्ट्र को कहा- "महाराज, अब कराल काल का समय आ गया है। अच्छा होगा आप अविलम्ब यहाँ से निकल चलें। काल हम सब के सिर पर मंडराने लगा है। उसको टालने का कोई उपाय नहीं है। आपकी उम्र ढल चुकी है और शरीर बुढ़ापे का शिकार हो गया है। आप पराए घर में पड़े हैं। दुःख है इतना सब होने के बाद भी प्राणी जीवित रहने की प्रबल इच्छा रखता है। विदुर जी ने महाराज धृतराष्ट्र को झकझोरते हुए कहा "आप आज भीम का दिया हुआ टुकड़ा खाकर कुत्ते का सा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जिनको आपने आग में जलाने की चेष्टा की, विष देकर मार डालना चाहा, भरी सभा में जिनकी धर्म पत्नी को अपमानित किया और जिनका सब कुछ आपने छीन लिया अब उन्हीं के अन्न से पले हुए प्राणों को रखने में आपका क्या गौरव है?" विदुर जी के शब्दों ने महाराज धृतराष्ट्र को नई अनुभूति प्रदान की। उनके ज्ञान चक्षु खुल गए और तत्काल महारानी गांधारी एवं महाभाग विदुर के साथ महाराज धृतराष्ट्र राजमहल छोड़ वनवास गमन कर गए।

प्रति दिन की भांति जब सम्राट युधिष्ठिर ने महाराज धृतराष्ट्र के कक्ष में प्रवेश किया तो वहां सिर्फ दुःखी संजय थे। बहुत पूछने पर भी संजय बताने में असमर्थ थे कि महाराज धृतराष्ट्र, महारानी गांधारी एवं महाभाग विदुर कहां चले गए। उसी समय देवर्षि नारद जी का आगमन होता है और सम्राट युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए कहते हैं कि हिमालय के दक्षिण भाग में जहां सप्तऋषियों की प्रसन्नता के लिए गंगाजी ने अलग-अलग सात धाराओं के रूप में अपने को सात भागों में विभक्त कर दिया है जिसे सप्तस्रोत भी कहते हैं वहीं ऋषियों के कार्यकारिणी सदस्य , अ.भा.मा. सम्मेलन आश्रम पर धृतराष्ट्र और गांधारी विदुर के साथ चले गए हैं। पांचवें दिन वे देह का परित्याग कर देंगे और फिर विदुरजी भी तीर्थ सेवन को चले जायेंगे। इतना कह कर देवर्षि नारद वहां से चले गए।

सम्राट युधिष्ठिर इस घटना से बेहद मर्माहत थे। उन्होंने अर्जुन को श्रीकृष्ण के साथ द्वारका भेजा था। काफी समय बीत गया परन्तु कोई संवाद नहीं हुआ। एक दिन देवर्षि नारद ने बताया था कि भगवान श्रीकृष्ण की लीला समाप्ति का समय आ गया है, उस कथन को यादकर युधिष्ठिर ज्यादा चिंतित हो रहे थे। ऐसी मानसिक स्थिति में युधिष्ठिर ने देखा अर्जुन द्वारका से लौट आए हैं परन्तु अर्जुन का शरीर निस्तेज था, निरन्तर उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। इसी अवस्था ने युधिष्ठिर को अधीर कर दिया। युधिष्ठिर के बराबर आग्रह के बाद अर्जुन कुछ संयत हुए और कहा, महाराज, श्रीकृष्ण अपनी इहलीला समाप्त कर गए। श्रीकृष्ण के कारण ही अर्जुन ने राजाओं के तेज का हरण कर द्रौपदी को प्राप्त किया था, उनके प्रताप से अर्जुन ने भगवान शंकर को प्रसन्न कर पाशुपत अस्त्र प्राप्त किया- उनकी कृपा से ही अर्जुन सशरीर स्वर्ग गया और देवराज इन्द्र की सभा में उसे बराबर के आसन पर बैठने का अवसर व सम्मान प्राप्त हुआ। उन्हीं की कृपा से भीष्म, द्रोण आदि महारथियों को पराजित कर राजा विराट का सारा गोधन वापस दिलाया था। इन तमाम परिस्थितियों का स्मरण करते-करते अर्जुन के आंसू रूक नहीं रहे थे। उन्हें सबसे अधिक वेदना इस घटना से थी कि श्रीकृष्ण की पत्नियों को द्वारका से लाते वक्त रास्ते में दुष्ट भीलों ने उसी अर्जुन को एक अबला की तरह परास्त कर दिया और वे उनकी रक्षा नहीं कर सके। उन्हें इस बात की ग्लानि हो

रही थी कि उनका गांडीव धनुष, बाण, वही रथ, वे ही घोड़े, बिना श्रीकृष्ण के क्षण में निस्तेज हो गए। अर्जुन ने कहा कि द्वारकावासी ब्राह्मण के श्राप वश मोहग्रस्त हो गए। मदिरापान से उन्मत होकर आपस में ही एक दूसरे से भिड़े और नष्ट हो गए। उनमें केवल चार-पांच ही बचे हैं। भगवान की अजीब लीला है, उन्होंने यदुवंशियों से दूसरे राजाओं का संहार कराया, फिर स्वयं यदुवंशियों से ही यदुवंश का नाश कराकर उन्होंने पूर्ण रूप से पृथ्वी को आततायिओं से मुक्त कराया।

जब कुन्ती ने अर्जुन से यदुवंशियों के विनाश और श्रीकृष्ण के परमधाम गमन की बात सुनी तो संसार से उन्हें विरक्ति हो गई। स्वयं सम्राट युधिष्ठिर भी मर्माहत हो गए और उन्होंने भी स्वर्गारोहण का निश्चय कर लिया। जिस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने मानव देह का उत्सर्ग कर पृथ्वी से प्रयाण किया उसी दिन यहां कलियुग आ धमका। महाराज युधिष्ठिर से कलियुग का प्रसार छिपा न रहा। उन्होंने देखा कि देश, नगर, घरों और जन-जन में लोभ, असत्य, छल, हिंसा आदि अधर्मों की वृद्धि हो रही है और विकृतियों का विस्तार तेजी से होगा। अतः उन्होंने तय किया कि अब हस्तिनापुर का सम्राट पद वे अपने विनयी और यशस्वी पौत्र को देकर गृहस्थाश्रम से मुक्त होकर हस्तिनापुर से प्रस्थान कर जाएँ। महाराज युधिष्ठिर को पूरा विश्वास था कि परीक्षित के प्रति श्रीकृष्ण का अगाध स्नेह व आशीर्वाद है और इसलिए एक सम्राट के रूप में परीक्षित जन-जन के हित में अधिक प्रभावी रहेंगे।

इस प्रकार परीक्षित हस्तिनापुर के सम्राट बने। उन्होंने उत्तर की पुत्री इरावती से विवाह किया और इस विवाह से उनके चार पुत्र हुए। उनके सबसे बड़े पुत्र का नाम था जनमेजय। सम्राट परीक्षित एक यशस्वी एवं महान शासक थे। आराधना व साधना उनका एक प्रबल आधार था। कृपाचार्य को आचार्य बनाकर उन्होंने जनकल्याण एवं समृद्धि के लिए तीन अश्वमेध यज्ञ किये। उसी समय उन्होंने सुना कि उनके साम्राज्य में काल का विस्तार तेजी से होने लगा है और यदि उसे रोका नहीं गया तो विनाश को रोकना संभव नहीं होगा। महाराजा परीक्षित ने कलियुग का बध करने का संकल्प किया और तलवार उठाकर उसे ललकारा। कलियुग स्थिति की गंभीरता समझ गया और वह महाराजा परीक्षित के चरणों पर गिर गया। महाराजा परीक्षित से कलियुग ने क्षमायाचना की और आश्रय के लिये उचित स्थान प्रदान करने का अनुरोध किया।

महाराजा परीक्षित ने उसे चार स्थान बतलाए जहां वह अपना आवास कर सके उनमें थे द्युत, मद्यपान, परस्त्रीसंग एवं हिंसा। इन स्थानों में क्रमशः असत्य, मद, आशक्ति और निर्दयता ये चार प्रकार के अधर्म निवास करते हैं। इस पर कलियुग ने अननुय विनय कर कहा कि इन चार स्थानों में मेरा निर्वाह नहीं होगा इसलिए कृपाकर एक स्थान और प्रदान करें जहां निवास किया जा सके। राजा परीक्षित ने उदारता के कारण उसे सुवर्ण में वास करने की अनुमति भी प्रदान कर दी।

सम्राट परीक्षित कलियुग से कोई द्वेष नहीं रखते थे उसकी वजह थी कि कलियुग के पुण्य कर्म तो संकल्प मात्र से फलीभूत हो जाते हैं। परन्तु पाप कर्म का फल उसे करने पर ही मिलता है। अब देखिए कलियुग का कालधर्म तो दुःख देना और दिग्भ्रमित करने का है। उसने सुवर्ण में रहने की अनुमति प्राप्त कर ली थी और इसलिए वह सम्राट परीक्षित के सुवर्ण मुकट में भी स्थिर हो गया। परिणाम यह हुआ कि सम्राट परीक्षित एक बार आखेट में गए हुए थे। रास्ता भटक गए और उन्हें भयंकर प्यास लग गई। वे शमीक ऋषि के आश्रम में पहुंच गए। ऋषि आंखें खोले हुए जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाओं से परे निर्विकार ब्रह्मरूप तुरीय अवस्था में ध्यानमग्न आराधना में लगे हुए थे। राजा परीक्षित के द्वारा जल याचना के बावजूद समाधिलीन ऋषि ने कोई उत्तर नहीं दिया और इससे राजा परीक्षित आहत हुए और पास पड़े एक सांप को उठाकर उनके गले में डाल दिया। ऋषि पुत्र ने जब सुना कि राजा परीक्षित ने यह जघन्य कार्य किया है तो उन्होंने कौशिकी नदी के जल से वाणी रूपी वज्र का यह कह कर प्रयोग किया "राजा परीक्षित ने मेरे पिता का अपमान किया है, इसलिए आज के सातवें दिन उसे यह तक्षक सर्प डंस लेगा।" शमीक ऋषि जब साधना से जागे तो पुत्र द्वारा परीक्षित को दिए गए शाप से बेहद मर्माहत हुए परन्तु अब बहुत देर हो गई थी।

संभवतः यह आश्चर्य की बात है कि तक्षक निरन्तर पांडवों के वंश का सर्वनाश करने की टोह में था। हस्तिनापुर का राज्य दुर्योधन की हठधर्मिता से जब पांडवों को नहीं मिला तो उन्हें खांडवप्रस्त में नया राज्य निर्माण करके रहने का आदेश महाराजा धृतराष्ट्र ने दिया पर खांडवप्रस्त में तक्षक अपनी सर्प जाति के साथ रहता था। इसके रहते वहां मानवीय संस्कारों के लोगों को बसाना कठिन था अतः तय किया गया कि खांडवप्रस्त के जंगल को जलाकर बस्ती के लायक बनाया जावे ताकि जहरीले जंतु और हिंसक जंतु उस क्षेत्र में नहीं रहे। तक्षक अपने वंश के विनाश को पांडवों के द्वारा किए जाने से आहत था। उसने तय किया था कि वह पांडव वंश का भी विनाश करेगा।

जब महाभारत का युद्ध चल रहा था और कर्ण अपने वाण अर्जुन पर चला रहा था तब भी वह कर्ण के बाण के आगे बैठ गया ताकि कर्ण का बाण जैसे ही अर्जुन को लगे तो वह उसे अपने जहर से समाप्त करे। किन्तु महान् नायक कर्ण ने उसे देखकर दूर फेंक दिया और दुत्कारते हुए कहा कि दुष्ट और नीच प्रवृत्ति के सहयोग से प्राप्त विजय धिक्कार स्वरूप है। जिनके संस्कार महान होते हैं और चरित्र प्रभावी होते है वे अपने दुश्मन का नाश करने के लिए भी नीचवृत्ति और दुष्ट प्रवृत्ति का साथ नहीं लेते।

अब जब कलियुग का आगमन हो गया तो तक्षक को एक मजबूत दुरात्मा मिल गई और कलियुग ने महाराज परीक्षित के मुकुट में बैठकर उनका मन दिग्भ्रमित कर दिया,

उनके विवेक को कुंठित कर दिया और महाराज परीक्षित के सामने मूर्छित होकर तक्षक ने अपने लिए ऋषिपुत्र का अप्रत्यक्ष आशीर्वाद प्राप्त कर लिया। ऋषिपुत्र ने श्राप दिया था कि यह तक्षक सातवें दिन राजा परीक्षित को डस लेगा और इस प्रकार तक्षक अपने प्रयास में सफल हो गया। महाराजा परीक्षित जब राजमहल पहुंचे और मुकुट खोला तो उन्हें अपना कृत्य ख्याल आया परन्तु तब तक बहुत देर हो गई थी।

महाराज परीक्षित इस प्रकार अपनी उदारता से स्वयं अपनी मृत्यु के कारण बने। उन्होंने कलियुग को इजाजत नहीं दी होती तो संभवत: आज मानवता का स्वरूप कुछ और होता। उन्होंने तक्षक के जहरीले इरादों के प्रति सावधानी बरती होती तो संभवत: यह अनहोनी टल जाती। परन्तु हमारा दुर्भाग्य तो यह है कि तक्षक हर मोड़ पर पड़ा हुआ है उसे कोई न कोई सहयोग देने वाला खड़ा हो जाता है और मानवता बार-बार अपनी मौत को रोकने में असफल हो जाती है।

महाराजा परीक्षित सातवें दिन ऋषि पुत्र के शाप से ब्रह्मलीन हो गए। उससे पहले ऋषि शमिक ने पुत्र द्वारा शापित सम्राट परीक्षित को बचाने का बेहद प्रयास किया किन्तु तक्षक ने सर्वचिकित्सा विशेषज्ञ कश्यप ब्राह्मण को धन देकर भ्रमित कर दिया और वे कोई मदद नहीं कर पाए।

तक्षक अपने कृत्यों से अब तबाही मचाने में जुट गया। उत्तक ऋषि भी मर्माहत थे। जब परीक्षित ब्रह्मलीन हो गए तो उनके मेधावी पुत्र जनमेजय हस्तिनापुर के सम्राट बने। वे भी यशस्वी, प्रभावी एवं योग्य शासक बने। जनमेजय निरंतर अपने प्रजाजनों के हित में कार्यरत रहे। परन्तु जब उत्तक ऋषि ने आकर सम्राट जनमेजय को तक्षक के बावत विस्तार से बताया कि किस प्रकार सम्राट परीक्षित को उसने डसा था तो जनमेजय क्रोध से विलविला उठे। अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए जनमेजय ने ब्राह्मणों को अग्निकुंड में सर्पों का हवन करने के लिए कहा। और परिणाम हुआ कि हजूम के हजूम सर्प उस हवन कुण्ड में भष्म होने लगे। डरकर तक्षक इन्द्र की शरण में चला गया और चूंकि इन्द्र को अमरत्व का वरदान है इसलिए तक्षक फिर बच गया क्योंकि वह इन्द्र के आसन के साथ लिपटा रहा। पांडवों के पूरे जीवन में उन्होंने अन्याय और अत्याचार का सामना किया और जीवन का हर संघर्ष उन्होंने झेला, मानवता को उन्होंने नए कीर्तिमान दिए। परन्तु हर बार अन्यायी और अत्याचारी हावी होते रहे। पांडवों की पीड़ाओं को मानवता ने समझा और उनके साहस और शौर्य का सम्मान किया है उनकी संवेदनाओं एवं संस्कारों का अपना इतिहास है। स्वयं भगवान कृष्ण उनकी सहायता के लिए अंतिम क्षण उनके साथ रहे। यह कितनी विडंबना है कि फिर भी कोई तक्षक बार-बार पांडवों के वंशजों को डसता रहा- मानवता को झकझोरता रहा। सम्राट जनमेजय जब तक उतंग ऋषि ने आपको अपने पिता सम्राट परीक्षित की अकाल मौत का विवरण नहीं बताया तक्षक के घिनौने स्वरूप को जाहिर नहीं किया आपका शौर्य क्यों सोता रहा। आज भी मानवता बार बार आततातियों के अत्याचार से ग्रस्त है।

कलियुग ने तक्षक के साथ ताण्डव मचा रखा है- मानवता बेहद असहाय है इसे कौन मुक्ति देगा। पांडवों के महान् वंशज के रूप में तक्षक का सर्वनाश करने से क्यों रूके? ''कुछ तो बोलो जनमेजय।'' बहुत सारे प्रश्न हैं, बहुत सारी चिंताएं हैं, दिग्भ्रमित मानवता को जीने का सही रास्ता कौन बताएगा? सारी सामाजिक व्यवस्था बिखर रही है। चालाक व चापलूस तक्षक के रूप में कलियुग के साथी बनकर हावी हो रहे हैं- कौन करेगा महाभारत? कब आएगा फिर कृष्ण? पांडवों के मेधावी महानायक जनमेजय कुछ तो बोलो- मैं फिर पूछूँगा, बहुत पूछना है, बार-बार पूछना है इनका उत्तर कब दोगे? कुछ तो बोलो जनमेजय!''

# अरदास

*-डा. उदयवीर शर्मा,*
*सम्पादक- वरदा*

हे असरण सरणा
मन्नै च्यानणो दिखा
जिण सूं मेरै मन रो अंधेरो
भागज्या
अर
मेरी अन्तर आतमा
सत चित आणद
रै आलोक में थिर रैय सकै॥
हे दीन दयाल
मेरी अन्तर री आग नै
शान्त कर, संजीवणी प्या
जिण सूं मैं जीवण संघरसां
रो सामनो कर सकूं
अर
थारलै विराट रूप री
सोवणी-मोवणी
झलक पा सकूं॥
हे जगत नारायण
मेरी विचलित कामनवां नै
दिढ भावी बणा।
जिण सूं
मैं आणद भरी मस्ती में
तेरा मनोरम गीत गा सकूं॥
हे अन्तरजामी
मन्नै मेरै आपै में रमादे
जिण सूं
मैं संसार में रमणै री
कला सीख सकूं।
अर
अपणै आपै सूं परै
अपार असीम
चिर शान्ति पा सकूं॥

बो अनुवाद-कार्यसाल सूं बा'वड़्यौ ई हो कै अेक कागद और आयग्यौ। साहित्य अकादमी री गोल्डन जुबली पर भोपाल में कथा वाचन। भारतीय भासवां रैल पच्चासूं लेखकां रै बीच बो आप री कहाणी बांचसी।

इण सोच रै साथै बो कागद नै फोर-फोर'र बांचतौ रैयो। उण जित्ती बर ई कागद बांच्यौ, न्यारौ ई मजौ आयौ। सोच्यौ, लगोलग दो उपलब्धि। भाग ई खुलग्या। ताबै ई आयगी। अब तो स्थापित होई ग्या समझौ। अनुवाद-कार्यशाला में मौकौ मिलणौ कोई मामूली बात है। भाषा रै लांठै विद्वानां नै मिलै अे मोका। अर लगतै ई बड़ी-बड़ी खांपा रै बिचळै भोपाल में कहाणी बांचणी। न्हाला ई होग्या। स्यात करड़ाई उतरगी। इत्तै ई दिनां री ही करड़ाई। ज्योतिस रै हिसाब सूं ओ म्हीनो तो भोत ई आच्छौ लाग्यौ है। रासी देखां के? के देखणी है रासी। के पड़्यौ है रासियां में। तकदीर तो बणाई बणै। अर फेर, सो कीं बणायौ ई बणै। बणायां राखणी पड़ै बणाणै सारू।

म्हैं पै'लां भाळौ हो। घणां ई फोड़ा देख्या। अब स्याणौ हुग्यौ। बणायां राखणी सीखग्यौ। कै फरक पड़ै आप सूं बडै री जूती सरकायां। आज सरकावूं। काल सरकुवाऊंगा। ओ तो घालगे काढणौ है। फळनै रै वास्तै गळणौं है। अर फेर इण में गळण आळी के बात है। आप सूं छोटै नै भाईजी ई तो कैवणौ है। बीं री ता बातां रा हुंकारा ई तो देवणा है। घणी करी तो उण री फीटै चुटकलां पर हांस लियां। का फेर बीं री पोथ्यां री बड़ाई करदी। आप री पोथी पर बीं सूं भूमिका लिखवली। विमोचन करवा लियौ। उण रै सरीकियां री चुगली कर दी।

अर चुगली में तो जोर ई के आवै। उल्टौ मजौ ई आवै। ई वास्तै आपां तो चुगली में भौतई माहिर हां। गोडै धड़गे इसी-इसी चेपां कै आगलै रै खाने ई बैठज्यै। लारलै दिनां अेक करजै सूं कळीज्योड़ै अर तंगी सूं टूट्योड़ै लेखक नै कीं अनुदान मिलै हो। पण लेयल्यौ अनुदान! म्हैं इसी चुंकल मरी कै पूंजीपतियां री लिस्ट में आयग्यौ मादर...! कैवण रौ मतलब म्हैं सीखग्यौ सगळी कुलपतराई। अर फेर, सीखूं'न के करूं। म्हैं तो घणां इ दिन दूध रौ धोयोड़ौ रैयो। अेक भरी-भूतली संस्था रै ठोकर मार'र अेकलौ चाल्यौ। पण पार कोनी पड़ी। साची ई कैयो है, अेकलियै री ओड़ चरै। कुण जीवण दयै अेकलियै नै। 'अेकला चालौ रे' तो गीत ई फूटरौ है। चालणौ भौत ओखौ है। ई वास्तै भेळा चालां हां अर भेळा ई चालस्यां। लगाय'र खास्यां खास्यां सगळा सूं। अर लगाय'र खाणै रो ई नतीजो है ओ, कै आज म्हारै हाथ में ओ कागद है।

इणी सोच सथै बो भाज'र आप री लुगाई कन्नै गयौ अर बतंण मांजती रै झोळियां में कागद गेर'र नाचण लागग्यौ।

आलै हाथ सूं कागद री कोर पकड़ती लुगाई बोली- "के लाधग्यौ? के लाधग्यौ? के आयौ है कागद में? म्हारै के समझ में आवै आ लिखाई।"

"भोपाल में कहाणी बांचस्यूं। आपणी भासा रै संयोजक रौ कागद है ओ। पांच नै पूगणौ है आज दो हुगी।"

आंगणै में ठुमरी घालतै थकां बोल्यौ।

"थे तो बड़ी यातरा करण लाग्या। दस दिनां सूं तो काल अम्बाळै सूं बा'बड़्या हो। अर पांच नै भोपाल सारू चढाई।"

"पांच नै तो पूगणौं है बावळी! भोपाल अठै ई है के? तड़कै तीन नै चढस्यां जद कोई टेमसिर पूगस्यां।"

"तो तड़कै ई जावोगा?"

"हांऽऽऽ... तैरै कोई अबखाई है के? मस्सां नम्बर आवण लाग्यौ है गूंगी टाट। थनै ठाह है, कित्ता पापड़ बेलणा पड़्या है। नीं तो लारलै दिनां कोई लट्टी ई नीं पूछती।"

# अेक कहाणी अैड़ी

-रामस्वरूप किसान, हनुमानगढ़

"इड्डी के मिलसी भोपाल में?"

"के मिलसी! आथण 'वी.एफ.' देखती बरियां बता स्यूं थनै।"

उण खिलखिला'र बीं रै बांथ भरली।

बा कसमसाय'र उणी बंयां सूं निकळगी। निकळ ज्यावौ निकळगी तो। उण, उणनै बांया में भरी ई कद ही। उण तो भोपाल में कहाणी बांचण री सुख नै बांथां में भरी ही। जकी अजे ई अण री बांथों में ही। उण बीं खुसी नै फिलम में हीरौ, हीरोइण नै चकै बींयां चकी अर आंगणै में नांचण लागग्यौ। अर आप रै साथै मांची पर सुवाण ली। छाती रै चेप पीठ पर हाथ फेरण लागग्यौ, मूं चाणण लागग्यौ। पण दूजी कानी खुसी ई कम नीं ही। पूरी बोछरड़ी। किणी फिलम री सिर चढी हिरोइण-सी। बा टिकी कोनी। लातालड़ियौ करण लागगी। छाती में मुक्का मारण लागगी। बटका बोढ़ण लागगी। उण रौ मूं नोचण लागगी। पण बो करड़ौ भौत हो। खुसी रै इण तुफानी रूप नै परटतौ गयौ। बा वार करती गयी। बो सैवतौ गयौ। क्यूंकै उण नै ठाह हो कै प्रेम रै पै'लै पड़ाव में हर प्रेमिका रौ रुख आक्रामक हुवै। ई वास्तै प्रेमी नै छाती राखड़ी पड़ै। जकौ खारा खासी बो ई मीठा खासी। ई वास्तै मीठा खाणै री आस में बो खुसी रै हाथ रा खारा खावै हौ। उण रा छेछुवा करै हो। अर बा करै ही मनमानी।

खुसी छर रौ बूकियौ झाल्यौ अर मांचै सूं उठायौ। बा उण नै सै'र रै अेक लांठै कवि कन्नै ठरड़ लेयगी। बींयां तो आ टाबरपणै सूं ई उण नै उण कवि कन्नै लेय ज्यांवती आयी है। पण आज री बात कीं न्यारी ई ही। आज अण, उण नै बांथ भर'र उण कवि रै पगां में पटक्यौ। अर फिलमी अंदाज सूं घूरतै थकां बोली, "दांतरी काढ़'र सगळी बात बता इण नै। देखै के है? म्हैं खुसी हूं। उपलब्धि री जायी। जूती में पाणी प्याय दयूं। बता इण नै सगळी बात।"

खउसी रौ थाप उण री गाल पर बाज्यौ।

फेर ई बो हास्यो। हमेस री भांत खुद री आदत है मुजब हांस्यौ अर उण लांठै कवि रा पग परसतौ बोल्यौ, "भाईजी, ओ कागद आयौ है। थारै आसींवाद सूं भोपाल में कहाणी बांचूलो।"

उण कवि उण रै बांथ भरली। बो उण री बांथां में धूजै हो। क्यूंकै कन्नै खुसी खड़ी ही। बा भळै गाजी, "सगळी बात बात बाडै सूं।"

बो कुरसी पर बैठग्यौ अर कवि मांचै पर। खुसी रै कैवणै सूं उण अेक घंट तांई बात बतायी। पण बा नाभी आळी बात दाबग्यो जकी रै कारण खुसी उण री बांथां में आयी।

खुसी इसारौ करयौ, "बा बात?"

"बा कोनी बतावूं। मजबूर हूं।"

"क्यूं कोनी बतावै?"

"आं नै बेरौ है। म्हैं म्हारै ई मूं सूं बताय'र नागौ नीं होवणौ चावूं। म्हनै माफ करदे म्हारी खुसी।"

बो खुसी नै लेय'र भोपाल चल्यौ गयौ। बडै बडै लेखकां साथ थ्री स्टार ठै'र्यौ। आखी भरतीय भासवां रै लिखारां सूं मिल्यौ। कहाणी पर गोष्ठी हुयी। बीं रौ नम्बर आयौ। अर जद मंच पर जाय'र कहाणी बांचण लाग्यौ, खुसी चिगरगी। मेज पर चढ़गी। आखरां पर हाथ फेरण लागगी। बो धूजण लाग्यौ। कहाणी सावळ नीं बांचीजी। बो हुट हुग्यौ। अर कमरै में आय'र आपरै साथीं नै बूझण लाग्यौ, "कियां रैयी म्हारी कहाणी?"

"मरा दिया यार। ईयां के हुग्यौ हो तेरै। खावै हो के थनै कोई। होलियौ ई बिगड़ग्यौ हो तेरै तो। अेकई सबद सावळ कोनी बोल सक्यौ। थूं तो तूड़ी ई करा दी आपणी भासा री।"

उण रै मूं पर दुवाड़ फिरग्यौ। चै'रै ठीकर बरगौ हुग्यौ। उण असवाड़ै-पसवाड़ै देख्यौ खुसी के ठाह किन्नै सरकगी ही। अचाणचकै चेतै आयौ कै उण रै गळ में आपरी काळी बांवां घाल'र गमी कित्ती देर सूं हींडण लागरी ही।

# धरती धोरां री

कविवर- कन्हैयालाल सेठिया

धरती धोरां री
आ तो सुरगां नै सरमावै
ई पर देव रमण नै आवै
ई रो जस नर नारी गावै
धरती धोरां री !
सूरज कण कण नै चमकावै
चन्दो इमरत रस बरसावै
तारा निछरावळ कर ज्यावै
धरती धोरां री !
काळा बादळिया घहरावै
बिरखा घूघरिया घमकावै
बिजळी डरती ओला खावै
धरती धोरां री !
लुळ लुळ बाजरियो लैरावै
मक्की झालो दे'र बुलावै
कुदरत दोन्यूं हाथ लुटावै
धरती धोरां री !
पंछी मधरा मधरा बोलै,
मिसरी मीठै सुर स्यूं घोलै
झीणूं बायरियौ पंपोलै
धरती धोरां री !
नारा नागौरी हिद ताता,
मदूआ ऊंट अणूंता खाथा
ई रै घोड़ा री के बातां
धरती धोरां री !
ई रा फळ फुलड़ा मन आवण
ई रै धीणो आंगण आंगण
बाजै सगळां स्यूं बड़ आगण
धरती धोरां री!
ई रो चित्तोड़ौ गढ़ लूंठो
ओ तो रण वीरां रो खूंटो
ई रो जोधाणूं नौ कूंटो
धरती धोरां री !
आबू आभै रै परवाणै
लूणी गंगाजी ही जाणै
ऊभो जयसलमेर सिंवाणै
धरती धोरां री !

ईं रो बीकाणूं गरबीलो
ई रो अलवर जबर हठीलो
ई रो अजयमेर भड़किलो
धरती धोरां री !
जैपर नगरयां में पटराणी
कोटा बूंदी कद अणजाणी
चम्बल कैवै आं री कांणी
धरती धोरां री !
कोनी नांव भरतपुर छोटो
घूम्यो सूरजमल रो घोटो
खाई मात फिरंगी मोटो
धरती धोरां री !
ई स्यूं नहीं माळवो न्यारो
मोबी हरियाणौ है प्यारो
मिलतो तीन्यां रो उणियारो
धरती धोरां री !
ईडर पालनपुर है ई रा
सागी जामण जाया बीरा
अै तो टुकड़ा मरू रै जी रा
धरती धोरां री !
सोरठ बंध्यो सारेठां लारै
भेळप सिंध आप हंकारै
मूमल बिसर्‌यो हेत चितारै
धरती धोरां री !
ईं पर तनड़ौ मनड़ौ वारां
ईं पर जीवण प्राण उंवारां
ईं री धजा उड़ै गिगनारां
मायड़ कोड़ां री !
ईं नै मोत्यां थाळ बधावां
ईं री धूळ लिलाड़ लगावां
ईं रो मोटो भाग सरावां
धरती धोरां रीं !
ईं रै सत री आण निभावां
ईं रै पत नै नही लजावां
ईं नै माथौ भेंट चढ़ावां
मायड़ कोड़ां री
धरती धोरां री !

## कविवर सेठिया जी की कुछ अप्रकाशित कविताएं

### जिज्ञासा?

जीवन क्या
केवल जिज्ञासा?
जो न मिले
उसकी ही आशा,
दुःख ही सुख की
है परिभाषा-
जलें दीप, तम की
अभिलाषा,
कविता क्या
शब्दों का मेला?
सपने अनगिन
सत्य अकेला।

### समय-विटप!

पककर
झर गया
एक दिन और
समय-विटप की
अतीत डाल से,
बैठ गया
थककर
उड़ता अन्धेरे का कौवा
फिर घोंसले में,
उतर आई
धरती पर
टिमटिमाते तारों की
प्रतिछवि
दीप बनकर!

### मोह भंग!

लौटकर
चले गये
कितने ही बसन्त
नहीं हुआ मरा ठूंठ
हरा,
हुआ उससे लिपटी
हरी लता का
मोह भंग
देखकर
पत्थर में हुए नंगे
विटपों में
फूटते कल्ले, कोंपल!

# सेवा के तरीके बदले हैं, भावना नहीं

*ओम प्रकाश पोद्दार, अध्यक्ष, कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन*

समाज सेवा के क्षेत्र में कोलकाता का कोई सानी नहीं है। यहां के लोगों में समाज के प्रति सेवा भावना आज भी बरकरार है। फर्क सिर्फ यह है कि सेवा करने के तरीके बदल गए हैं। मूल रूप से सेवा की भावना बरकरार रहना बहुत बड़ी बात है। मारवाड़ी समाज की युवा पीढ़ी समाज सेवा करने से दूर हट रही है ऐसा नहीं है। बल्कि युवा वर्ग में सेवा की भावना ज्यादा है और वे काम भी ज्यादा कर रहे हैं। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि समाज के अग्रज उनके विचारों का सम्मान करते हुए उन्हें भी समाज सेवा की मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश करें। जो पुरानी संस्थाएं हैं, उनके काम करने का अपना एक अलग तौर-तरीका है, जो हो सकता है कि युवा वर्ग के लोगों को नापसंद हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि युवा पीढ़ी के लोग इस तरह के कामों को तरजीह नहीं देते या उनमें सेवा भाव नहीं है। जमाना बदल गया है, जीने का तरीका बदल गया है, रहन-सहन और खान-पान बदल गया है। इसके साथ ही समाज सेवा करने के तौर-तरीके भी बदल गये हैं। युवा पीढ़ी संस्थाओं के माध्यम से सेवा न कर लायन्स और रोटरी के जरिये सेवा का काम कर रही है। अंधत्व के खिलाफ लड़ाई लड़ने, मरीजों के लिए खून की जरूरत पूरी करने के मकसद से रक्तदान शिविर लगाने और पोलियो का नामोनिशान मिटाने के लिए लायन्स तथा रोटरी जैसी संस्थाएं महत्वपूर्ण काम कर रही हैं और इन संस्थाओं से समाज की युवा पीढ़ी जुड़ी हुई है।

शिक्षा का विकास हुआ है और खासकर महिलाएं अच्छी से अच्छी शिक्षा हासिल कर अपनी प्रतिभा का एहसास करा रही हैं। महिलाओं के पढ़-लिख जाने से समाज को काफी लाभ मिल रहा है। उद्योग-व्यापार भी अच्छे ढंग से महिलाएं सम्हाल रही हैं और समाज सेवा के क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। अगर समाज में सचमुच बदलाव की क्रांति लानी है, अलगाववाद और आतंकवाद को खत्म करना है तो इसके लिए महिलाओं को बढ़ावा देना होगा और उनके महत्व को सहर्ष स्वीकार करना होगा। युवा पीढ़ी भी उच्च शिक्षा हासिल कर उद्योग-व्यापार के क्षेत्र में अपनी काबिलियत का एहसास करा रही है, लेकिन आज जरूरत इस बात की है कि बच्चों को रोजगारपरक अर्थात् व्यावहारिक शिक्षा दी जाए ताकि उन्हें नौकरी के लिए दर-दर भटकना न पड़े। महंगाई और मजबूरी की सबसे बड़ी मार निम्न और मध्यम इन्हीं दो वर्गों पर पड़ रही है, जिस पर समाज को ध्यान देना होगा। सरकारें और समर्थ लोग दोनों ही गरीबों पर ध्यान दे रहे हैं यह एक अच्छी बात है, लेकिन मध्यम और निम्न वित्त वर्ग की दशा पर भी ध्यान देने की नितांत आवश्यकता है, क्योंकि मध्यम वर्ग का कोई भी व्यक्ति सामाजिक मर्यादा को कायम रखने में ही पिसा जा रहा है। स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में महंगाई इतनी चरम पर पहुंच चुकी है कि लोगों को अपने बच्चों को पढ़ाना मुश्किल हो रहा है। इलाज की दृष्टि से भी यही हाल है। यह एक हकीकत है जिसे समाज को समझना चाहिए। अगर समाज का हर समर्थ व्यक्ति यह संकल्प कर ले कि अपनी क्षमता के अनुसार वह प्रति वर्ष एक-दो गरीब बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठायेगा या किसी एक-दो व्यक्तियों की चिकित्सा का खर्च उठायेगा तो काफी हद तक मध्यम वित्त वर्ग की परेशानी दूर हो सकती है। यह सच है कि हमारे समाज पर पश्चिमी सभ्यता का असर पड़ा है, लेकिन यह कहना अनुचित होगा कि युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति व संस्कारों से दूर होती जा रही है। एक तरफ शिवरात्रि और जन्माष्टमी का व्रत रखा जाता है तो दूसरी तरफ क्रिसमस डे व वेलेंटाइन डे भी मनाया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपनी संस्कृति से युवावर्ग विमुख नहीं हुआ है।

*हरियाणवी ठिठोली*

## मोहनिया की लुगाई

हरियाणा क एक गाम म
बुढ़ी लुगाय खातर चालो
शिक्षा अभियान
दिल्ली स एक मास्टर आयो पढ़ान
एक दिन म एक ए हरप पढ़ानो थो
दूसरअ दिन याद करकअ आनओ थो
पढ़ायो- A फोर एपल
दूसरा दिन- पूछ्नअ लाग्यो मास्टर
म्हानअ तो को याद ना
उस दिन पढ़ायो B फोर ब्वाय
आगलअ दिन लुगाया बोल्यी म्हानअ तो
बस याद ह नोहरा म खड़ी गाय
दुखी आयड़ो मास्टर न एक योजना बनायी
पंद्रह दिन की छुट्टी सगली लुगाया न
सुनायी
मास्टर न करी सारअ गाम की घुमायी
फेर दिमाग म नु पढ़ान थी योजना बनायी
पंद्रह दिन पाछ्अ क्लास लागी
मास्टर क मन म आश जागी
ब्लेक बोरड़ प मांडा
A-A फोर अनिलयां की लुगायी
आगलअ दिन लुगाया न आकअ
वाई बात सुनायी
B-B फोर बच्चु की लुगायी
C-C फोर छोटुवा की लुगायी
D-D फोर डबुड़ा की लुगायी
सगली लुगाया क होन लागी याद
A, B, C, D, E, F, से पोह्ची
M ताई बात
M-M फोर मोहनिया की लुगायी
मास्टर न पढ़ायी ओर आगअ बढ़ायी
बारी इब W की आयी
मास्टर मांडो W और बोल्यो
W फोर....
मास्टर स पेहली सारी लुगाया न
आवाज लगायी
या दिखअ तो स मोहनिया की
लुगायी
पर या उल्टी क्यूं खड़ी ह भाई?

***(हरियाणा का लट्ठ काव्य संग्रह लेखक अनूप अनुपम से साभार)***

## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

# कोलकाता : कार्यकारिणी समिति की बैठक

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक दिनांक १० मई २००६ को सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

२. महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने गत बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

३. महामंत्री ने अपनी रपट में सम्मेलन द्वारा सम्पादित कार्यक्रमों से सभा को अवगत कराया।

४. सम्मेलन की लन्दन में सहयोगी संस्था 'दी राजस्थानी फाउण्डेशन' में नये पदाधिकारियों में श्री गोकुल बिन्नानी-अध्यक्ष, श्री अशोक सचेती- उपाध्यक्ष, श्री संजय अग्रवाल- सचिव तथा श्री बी.एन. सिंघानिया,श्री बी.सी. अग्रवाल एवं श्रीमती संगीता कानोड़िया के सदस्य निर्वाचित होने की जानकारी दी गयी।

५. विभिन्न प्रान्तीय सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति की जानकारी दी गयी।

६. शीघ्र ही अखिल भारतीय समिति की बैठक एवं आगामी २०वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित करने का निर्णय लिया गया। बैठक एवं अधिवेशन का स्थान एवं तिथियां तय करने का अधिकार सर्वसम्मति से सम्मेलन सभापति को दिया गया।

७. वर्तमान आर्थिक स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए, समाज विकास में विज्ञापन एवं सम्मेलन में सदस्यता अभियान को बढ़ाने की अपील की गयी।

८. सम्मेलन भवन के नव निर्माण हेतु राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने सक्रिय कार्यवाही का अनुरोध किया एवं अपनी ओर से हर संभव आर्थिक अनुदान देने का आश्वासन दिया।

९. सभापति ने मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन सम्बन्धित श्री आत्माराम सोंथलिया की अध्यक्षता में वार्षिक साधारण सभा में गठित कमिटी द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट फाउण्डेशन के पास विचारार्थ भेजने की जानकारी दी।

१०. सभापति को धन्यवाद देने के उपरान्त सभा समाप्त की गयी।

## पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

# लखिमपुर : नवनिर्वाचित शाखाध्यक्ष का शपथ ग्रहण

२३ अप्रैल मारवाड़ी सम्मेलन लखिमपुर शाखा सत्र २००६-०८ के लिए नवनिर्वाचित शाखाध्यक्ष श्री नन्दकिशोर राठी तथा उनके द्वारा मनोनीत कार्यकारिणी सदस्यों को पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार मंगलूनिया व महामंत्री श्री बजरंगलाल नाहटा द्वारा स्थानीय मारवाड़ी युवा मंच भवन में शपथ दिलाई गई। मारवाड़ी सम्मेलन लखिमपुर शाखा का सत्र २००४-०६ का कार्यकाल मार्च २००६ में समाप्त हो गया था, अतः उस सत्र के शाखाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद पारीक ने गत् ११.३.०६ को शाखाध्यक्ष हेतु चुनाव कराया तथा चुनाव में श्री नन्दकिशोर राठी विजयी घोषित किये गये।

उक्त शपथ ग्रहण समारोह प्रान्तीय अध्यक्ष व महामंत्री के शाखाओं के दौर के तहत हुआ। उक्त समारोह मारवाड़ी सम्मेलन व महिला मंच लखिमपुर की दोनों शाखाओं ने संयुक्त रूप से आयोजित किया। समारोह का शुभारंभ महिला मंच द्वारा स्वागत गान से हुआ। इसके बाद समाजसेवी स्व. मुरलीधन जी सुरेका के आकस्मिक निधन पर एक मिनट का मौन रखा गया। स्वागत भाषण में मारवाड़ी सम्मेलन के शाखाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद पारीक ने उपस्थित सभी को रंगाली बिहु की बधाई दी तथा अपने कार्यकाल में किये गये हर कार्यों में सहयोग देने वाले सभी समाज बन्धु व युव साथियों को धन्यवाद ज्ञापन किया तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन की श्रृंखला में शाखा की सभाओं में सर्वोच्च उपस्थिति हेतु सह-सचिव श्री शंकरलाल राठी, हर कार्यों को सुनियोजित ढंग से संचालन व सम्पादन करने हेतु शाखा सचिव श्री हीरालाल जैन, कुशल कोषाध्यक्ष श्री बलवीर प्रसाद शर्मा तथा श्री पवन कुमार अग्रवाल को सराहनीय ढंग से चुनाव सम्पन्न करवाने हेतु प्रशस्ति पत्र सहित असमीया सोराई से शाखाध्यक्ष ने अभिवादन किया। महिला मंच की उपाध्यक्षा श्रीमती लक्ष्मी मालपानी ने अध्यक्षीय सम्बोधन में अतिथियों का अभिवादन किया।

समारोह की अन्य कार्यक्रमों में मारवाड़ी सम्मेलन व महिला मंच लखिमपुर की दोनों शाखाओं के सचिवों ने अपने-अपने शाखाओं के गतिविधियों का ब्यौरा सुनाया व प्रतियां सभा में वितरित की।

मुख्य अतिथि तथा प्रान्तीय अध्यक्ष ने अपने भाषण में मारवाड़ी समाज के सभी वर्गों को एक ही बैनर तले एकत्रित होने का आह्वान किया तथा सभी का साथ लेकर सामाजिक कार्य करने को कहा जिससे मारवाड़ी समेत सभी जातियों को लाभ मिल सके। सम्मेलन के प्रान्तीय मुख्यालय से प्रकाशित मुखपत्र 'सम्मेलन समाचार' के अधिक से अधिक पाठक बनने का भी अनुरोध किया। अपने भाषण

में लखिमपुर के श्री नन्दकिशोर माहेश्वरी (गीगा) को उनके बहुआयामी सामाजिक, धार्मिक कार्यों हेतु असमीया व मारवाड़ी समाज का गौरव कहा साथ ही उन्हें लखिमपुर के दूसरे ज्योति प्रसाद अग्रवाल कहा जिसे सभा में उपस्थित सभी ने जोरदार तालियों से स्वागत किया।

अन्त में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर राठी ने अपने सम्बोधन में सभी समाज बन्धुओं को एक ही बैनर तले तथा महिला मंच व युवा मंच के साथ हर कार्य संयुक्त रूप से आयोजित करने का वादा किया जिसमें मुख्यत: समाजसेवा, समाज सुधार व स्वास्थ्य सेवा प्रमुख होंगे। अन्त में श्री इन्द्रचन्द जैन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

## गुवाहाटी : सम्मेलन पदाधिकारियों के दौरे में कई शाखाएं पुनर्जीवित

२० अप्रैल। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष विजय कुमार मंगलूनिया तथा प्रांतीय महामंत्री बजरंग लाल नाहटा ने गत दिनों विश्वनाथ चारआली, गोहपुर, नाहरलागुन, धेमाजी, सिलापथार, नार्थ लखीमपुर, बालीपाड़ा तथा रंगापाड़ा का दौरा किया। दौरे का उद्देश्य शाखाओं का पुनर्गठन एवं नई शाखाओं का गठन कर संगठन को मजबूत करना था। सभी जगहों पर समाज बंधुओं ने बहुत ही उत्साह के साथ पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा सम्मेलन को सक्रिय बनाने में अपने भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया है।

२१ अप्रैल को सर्वप्रथम विश्वनाथ चारआली में सुण्डाराम महादेव के यहाँ एक सभा आयोजित हुई। सभा की अध्यक्षता श्रीलाल अग्रवाल ने की। उपस्थित समाज बन्धुओं ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये तथा सर्वसम्मति से ११ सदस्यीय कार्यकारिणी समिति का गठन कर शाखा का पुनर्गठन किया गया। घाहीगांव के हनुमान राईस मिल परिसर में दामोदर प्रसाद मुरारका की अध्यक्षता में गोहपुर शाखा की एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में स्थानीय शाखा के सदस्यों ने सर्वसम्मति से ११ सदस्यीय कार्यकारिणी का चुनाव कर पदाधिकारियों का चयन किया। नाहरलागुन कालीबाड़ी प्रांगण में एक सभा का आयोजन किया गया। अच्छी संख्या में उपस्थित व्यक्तियों ने नाहरलागुन में सम्मेलन की एक शाखा की जरूरत महसूस करते हुए नई शाखा के गठन का प्रस्ताव रखा। तत्पश्चात सर्वसम्मति से ११ सदस्यीय कार्यकारिणी समिति गठित करने का निर्णय लेने के साथ ही औपचारिक रूप से एक नई शाखा का गठन हुआ। तत्पश्चात् पदाधिकारियों का चयन किया गया जिसमें कमल बजाज-अध्यक्ष, कमल जैन- सचिव, अशोक अग्रवाल-कोषाध्यक्ष, सुरेश बिहानी व सत्यनारायण तापडिया- उपाध्यक्ष, महेश शर्मा व गोपीकिशन डागा- संयुक्त मंत्री, सत्यनारायण राठी, द्वारका प्रसाद मालपानी, राजेन्द्र अग्रवाल, अजय अग्रवाल को कार्यकारिणी सदस्य रूप में चयन किया गया।

२२ अप्रैल को श्याम सुन्दर गाड़ोदिया की अध्यक्षता में एक सभा आयोजित हुई उपस्थित सभी लोगों ने विचार विमर्श के पश्चात् शाखा के चुनाव हेतु ७ मई की तिथि निर्धारित की। सायं में शाखा की एक सभा आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता समाजसेवी, प्रकाश जैन ने की। समाज बन्धुओं ने अच्छी संख्या में उपस्थित होकर अपना उत्साह दिखाया। सभी ने नई शाखा के गठन के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से ग्रहण करते हुए १५ सदस्यों की एक कार्यकारिणी गठन की। तत्पश्चात् पदाधिकारियों का चयन किया गया। जिनमें चांदरतन चांडक- अध्यक्ष, अशोक जैन- सचिव तथा झुमरमल शर्मा को कोषाध्यक्ष चुना गया।

२३ अप्रैल नार्थ लखीमपुर शाखा का शपथ विधि समारोह आयोजित हुआ जिसमें मुख्य अतिथि सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री मंगलूनिया एवं विशिष्ट अतिथि प्रांतीय महामंत्री नाहटा उपस्थित थे। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथग्रहण एवं विभिन्न कार्य सूची के तहत यह समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि कुछ ही दिनों पहले शाखा के चुनाव में नंदकिशोर राठी विजयी घोषित हुए थे।

सायं में आयोजित सभा में स्थानीय समाजबंधुओं विशेषकर परमेश्वरलाल शर्मा, तोलाराम जोशी, श्रवण कुमार पारीख ने शाखा गठन में विशेष रूचि दिखलाते हुए अति शीघ्र नई शाखा गठन करने का आश्वासन दिया।

सायं में राधेश्याम धानुका की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। शाखा गठन के कार्य को अग्रसर करने हेतु लक्ष्मीनारायण शर्मा के नेतृत्व में एक तदर्थ समिति का गठन किया गया। जिसके अन्य सदस्य हैं - राधेश्याम धानुका, कमलेश अग्रवाल, दामोदर बंसल, माणकचंद डुगड़, राजेश पाटोदिया तथा जयप्रकाश शर्मा।

उपरोक्त दौरे के दौरान सभी ने सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'सम्मेलन समाचार' (मासिक मुखपत्र) की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। साथ ही सभी ने कहा कि इसके नियमित प्रकाशन से सभी शाखाओं में सक्रियता के साथ-साथ इसके सदस्यों में उत्साह बढ़ेगा। ज्ञातव्य है कि 'सम्मेलन समाचार' का प्रकाशन दिसम्बर माह से ही नगांव से नियमित रूप से हो रहा है।

## झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

### द्वितीय प्रान्तीय अधिवेशन का समापन समारोह सम्पन्न

देवघर : झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन जो दिनांक १८ एवं १९ फरवरी २००६ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया था उसका समापन समारोह दिनांक २८ अप्रैल २००६ को देवघर सभागार में सम्पन्न हुआ।

समारोह में स्वागत समिति के सभी सदस्यगण, शहर के गणमान्य व्यक्ति, महिला समिति एवं मारवाड़ी युवा मंच देवघर शाखा के सदस्यगण

तथा प्रेस प्रतिनिधिगण उपस्थित हुए थे।

समापन समारोह स्वागत समिति के स्वागताध्यक्ष श्री त्रिलोकचन्द्र बाजला की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। प्रान्तीय अध्यक्ष गोविन्द प्रसाद डालमिया- झारखण्ड, विशिष्ट अतिथि थे। स्वागतमंत्री श्री अभय सर्राफ- मारवाड़ी सम्मेलन देवघर शाखा के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश छावछरिया तथा अधिवेशन के कोषाध्यक्ष श्री शंकरलाल सिंहानिया भी मंचासीन थे। सभी ने अपने-अपने उद्‌गार प्रकट किये एवं द्वितीय अधिवेशन की सफलता पर सभी ने हर्ष व्यक्त किया। स्वागत समिति की तरफ से सम्मानित करने के कार्यक्रम में सर्व प्रथम स्व. सवाई राम जी माहेश्वरी जो एक सच्चे समर्पित समाजसेवी थे एवं जिनका निधन समापन समारोह के १५ दिन पूर्व ही हुआ था उनके सम्मान में एक प्रशस्ति पत्र पढ़कर सुनाया गया और यह निर्णय लिया गया कि प्रशस्ति पत्र उनके पुत्रों को भेज दिया जाय। श्री श्याम कीर्तन मंडल एवं मारवाड़ी युवा मंच, देवघर शाखा को भी एक एक प्रशस्ति पत्र दिया गया। देवघर महिला समिति द्वारा बहुत ही मनोरम उपदेशात्मक और शालीनता भरा कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर स्वागताध्यक्ष श्री त्रिलोकचन्द बाजला के कर कमलों से एक बहुत सुन्दर ट्रॉफी महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सुमन बाजला एवं उनके अन्य सदस्यों को प्रदान की गयी। इसके अलावा ४४ कलाकारों को एक एक सिलवर मेडल प्रदान किया गया।

कोषाध्यक्ष श्री शंकरलाल सिंहानिया ने अधिवेशन के आय-व्यय का लेखा-जोखा पढ़कर सुनाया और यह निर्णय लिया गया कि संविधान के अनुसार लेखा-जोखा की एक प्रति स्वागत समिति द्वारा जिला अध्यक्ष को दी जायेगी जिसे जिला अध्यक्ष प्रान्तीय कार्यालय में अग्रसरित कर देंगे। विशेष कारणवश केन्द्रीय सम्मेलन के पदाधिकारी नहीं पधार सके, इसे नोट किया गया। उपस्वागताध्यक्ष श्री किशोरीलाल जी मोर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

## अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

### पटना सिटी- प्रान्तीय सम्मेलन का दशम अधिवेशन सम्पन्न

२७ मार्च। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन का दशम प्रादेशिक अधिवेशन "ज्योत्सना पर्व-०६" बड़ी धूमधाम से पटना सिटी में अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। अधिवेशन की स्वागताध्यक्ष डा. उषा पोद्दार ने इस अवसर पर कहा कि आज हर प्रान्त, देश, विश्व कठिन एवं भयावह परिस्थितियों से गुजर रहा है। इस बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में सम्मेलनों की आवश्यकता है जो एक नई दिशा, नई ऊर्जा, सही मार्ग, दर्शन समाज को दे सके। हमने आज के इस अधिवेशन का नाम 'ज्योत्सना पर्व' दिया है जो तिमिर अन्धकार को दूर कर महिलाओं के जीवन में एक आभा, ज्योति, उचित मार्ग दर्शन देगा।

प्रान्तीय अध्यक्षा मीना गुप्ता ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम बहनें अपनी शक्ति को पहचानें और अपनी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों में लगायें। जिस समाज ने हमें इतना कुछ दिया है अपने कर्तव्यों द्वारा उसका कुछ ऋण उतार सकें।

प्रान्तीय सचिव श्रीमती सीता झुनझुनवाला ने कहा कि नारी में इतनी शक्ति है कि वो अपने वचनों से सभी को एकसूत्र में बाँध सकी है। इसलिए नारी को शक्ति भी कहते हैं। प्रादेशिक, कोषाध्यक्ष, श्रीमती उषा राठी ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया।

अधिवेशन में युवा समाज सेवी मनोज कमलिया, समाज सेवी कर्मठ विदुषी महिला एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा डा. मंजू मेहरिया को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

संयोजिका शोभा गुप्ता ने अपने उद्‌गार में प्रकट किया कि पिछले दो दशकों में समाज की महिलाओं ने रूढ़िवादी बन्धनों को तोड़कर शालीनता के साथ प्रगतिशील भारत के निर्माण की ओर कुछ कदम बढ़ाए हैं। 'ज्योत्सना पर्व २००६' में हमें यह मंथन करना होगा कि बदलती दुनिया में हम बहनें अपनी सार्थक भूमिका कैसे निभा पायें।

इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया गया जिसका सम्पादन श्रीमती अनिता अग्रवाल ने किया। शाखा सचिव अनिता अग्रवाल ने कहा कि इस ज्योत्सना पर्व के माध्यम से नारी के गुणों जैसे सेवा, सहनशीलता आदि को समाज के सामने लाने की कोशिश की है और हमारी बहनें अपने इन गुणों को पहचाने।

पटना सिटी शाखा की निम्नलिखित स्थायी योजनाएं हैं :-

शिशुभवन विद्यालय में दस बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, डा. कैलाश प्रसाद लाड़िया के यहां से गरीबों को मुफ्त ऑक्सीजन वितरण, अन्तर्ज्योति विद्यालय में नेत्रहीनों को मुफ्त ऑक्सीजन मुहैया, प्रत्येक माह ५० किलो चावल का अनुदान। पटना सिटी रेलवे स्टेशन पर समिति द्वारा यात्रियों के लिए लगाई गई ठंडे पानी के मशीन की नियमित देखरेख। गरीब अनाथ बच्चों की शादी में सहयोग करना। बाढ़ पीड़ितों, तूफान पीड़ितों आदि के लिए सहयोग प्रदान करना। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र को संचालित करना। अनाथ आश्रम में कपड़े व खाद्य सामग्री का वितरण करना। जगह-जगह लगने वाले शिविरों में सहयोग प्रदान करना। शिक्षा के लिए विभिन्न स्कूलों में पाठ्य-सामग्री मुहैया करना। भीषण गर्मी में जगह-जगह प्याऊ लगवाना। पूजा स्थल व जुलूसों में शर्बत वितरण। त्यौहारों पर सामग्री वितरण करना। कार्यशाला के माध्यम से गरीब बच्चों को कला का प्रशिक्षण देना। गरीबों के टूटे मकान के पुनर्निर्माण के लिए सहयोग प्रदान करना। समय-समय पर धार्मिक यज्ञ करवाना एवं प्रतियोगिताएं करवाना।

बिहार प्रान्त में महिला सम्मेलन की मुजफ्फरपुर को लेकर ११ शाखाएं कार्यरत हैं।

सत्र २००६-०८ के लिए नवनिर्वाचित पदाधिकारी इस प्रकार हैं :- पटना शाखा- अध्यक्षा श्रीमती सरोज जैन, सचिव- कुसुम तुलस्यान,कोषाध्यक्ष- सूरज गुप्ता। दरभंगा शाखा- अध्यक्षा- श्रीमती अनिता चौधरी, सचिव- मंजु बरोलिया, कोषाध्यक्ष- विनिता सराफ। भागलपुर शाखा- अध्यक्षा-श्रीमती पदमा बाजोरिया, सचिव- तारादेवी अग्रवाल। बक्सर शाखा- अध्यक्षा- श्रीमती निर्मला अग्रवाल, सचिव आशा पोद्दार, कोषाध्यक्षा- मधुमान सिंहका। बखरीबाजार शाखा- अध्यक्षा- मंजु अग्रवाल, सचिव अलका अग्रवाल, कोषाध्यक्षा- मंजु लोहारीवाल। लहेरिया सराय शाखा- अध्यक्षा- श्रीमती सुलोचना बालोदिया।

सत्र- २००६-०८ हेतु निवनिर्वाचित बिहार प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती निशा सर्राफ ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि नि:स्वार्थ भाव से की गयी सेवा मन को सरल, निर्मल और उज्जवल बना देती है। मैं नारी समाज के किसी काम आ सकूं यह सोचकर ही खुशी होती है और मन अपने कर्तव्य के प्रति और सजग हो जाता है।

अधिवेशन में भारी संख्या में महिलाओं एवं पुरुषों ने भाग लिया। आयोजक समिति के संरक्षकगणों में थे सर्वश्री गोविन्द प्रसाद भरतिया, महावीर प्रसाद कमलिया, गिरधारीलाल सराफ, राम कैलाश सरावगी, रमेश चन्द्र गुप्ता। सह स्वागताध्यक्षों में थीं श्रीमती रमा भरतिया, रमा सुल्तानिया, वीणा कुलश्रेष्ठ, गीता, कसेरा, सरोज गुटगुटिया, शकुन्तला मोदी, तारा पोद्दार।

## अन्य संस्थाएं

### हैदराबाद : दि.ए.पी. महेश को-ऑपरेटिव बैंक लि. निरन्तर प्रगति की ओर

महेश बैंक के चेयरमैन एवं आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने यहां जारी एक विज्ञप्ति में बताया कि बैंकिंग कारोबार के प्रत्येक क्षेत्र में बैंक ने आशातीत सफलता अर्जित की है। अनुभवी तथा योग्य निदेशक मण्डल की सूझबूझ और अनुभव-परिपक्वता के कारण बैंक चतुर्मुखी प्रगति बनाए हुए है।

श्री बंग ने बताया कि वर्ष २००५-०६ में बैंक ने ५.०५ करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ अर्जित करते हुए विगत वर्ष की तुलना में २५ प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। ३१ मार्च २००६ को समाप्त हुए वित्त वर्ष में बैंक की जमा राशि ३४०.१५ करोड़ से बढ़कर ३६९.८८ करोड़ रुपये हो गई है।

डिपाजिट रेशियो ४६.३९ प्रतिशत तक बढ़ा है एवं कुल आय ४६.२१ करोड़ से बढ़कर ४८.६१ करोड़ तक पहुंची है। वर्किंग कैपिटल राशि ४९५.७१ करोड़ से बढ़कर ५१७.६९ करोड़ रुपये हो गई है। श्री बंग ने बैंक के कारोबार का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्टेटयूटरी आडिट में बैंक को 'ए' ग्रेड ही मिलता आ रहा है जो गर्व की बात है। भावी योजनाओं पर उन्होंने बताया कि एनीवेयर बैंकिंग को सभी शाखाओं में आरंभ करने की योजना है जिससे ग्राहक बैंक की किसी भी शाखा में अपना व्यापार कर सकेगा। सभी शाखाओं में २ मई से कार्यावधि सायं ५.०० बजे तक बढ़ाया जाएगा। दक्षिण का यह प्रथम बैंक है जिसे रिजर्व बैंक द्वारा १९९६ में शेडयूल्ड बैंक और २००१ में मल्टी शेडयूल्ड बैंक होने का गौरव प्राप्त हुआ।

## शोक सभा/श्रद्धांजलि

### मुजफ्फरपुर : श्री हनुमानमल बोथरा नहीं रहे

मारवाड़ी एवं वैश्य समाज के कर्मठ एवं निर्भीक वक्ता तथा उत्तर बिहार वाणिज्य एवं उद्योग परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष हनुमानमल बोथरा का देहान्त बुधवार १८ अप्रैल २००६ को ६९ वर्ष की आयु में हो गया। आप अपने पीछे पाँच पुत्र एवं एक पुत्री छोड़ गये हैं। आपकी पत्नी का देहान्त तीन वर्ष पूर्व हो गया था।

आपके आकस्मिक निधन का समाचार मिलते ही पूरा शहर शोक में डूब गया। आपके निधन पर बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा एक शोक सभा का आयोजन किया गया।

१.५.०६ पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन शिवसागर शाखा द्वारा निम्न दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि व्यक्त की गयी -

२७.४.०६ शिवसागर शाखा के पूर्व अध्यक्ष स्व. प्रभुदयाल दम्माणी की पुत्र वधू श्रीमती गौरी देवी दम्माणी के निधन पर।

८.४.०६ शिवसागर शाखा के सलाहकार, कर्मठ कार्यकर्त्ता, समाजसेवी श्री वंशीधर अग्रवाल की सुपुत्री श्रीमती शारदा देवी गिनेड़िया के निधन पर।

Wonder Images Pvt. Ltd.
we print on
FLEX
SAV
MESH
ONE-WAY VISION
FLOOR ETCHING
UK MEDIA
LAMINATION
CANVAS
Etc.
Contact :-
22155479
22155480
9830045754
9830051410
9830425990
9830768372
9830590130
9331854244
9231699624
154, LENIN SARANI,
KOLKATA-13
2nd Floor

एक प्रति १० रुपए * वार्षिक १०० रुपए

# समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मई २००६ * वर्ष ५६ * अंक ५

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के दशम् प्रादेशिक अधिवेशन - 'विकास उत्सव-२००६' ( भुवनेश्वर ) को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल बुलस्यान ।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन के दशम् प्रादेशिक अधिवेशन - 'ज्योत्स्ना पर्व - २००६' ( पटना सिटी ) के अवसर पर पदाधिकारीगण मशाल लिए हुए ।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन ( देवघर ) के समापन समारोह में बायें से श्री ओमप्रकाश छावछरिया, अध्यक्ष, देवघर शाखा, श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, प्रान्तीय अध्यक्ष ( भाषण देते हुए ), श्री त्रिलोक चन्द बाजला, स्वागताध्यक्ष, श्री अभय सर्राफ, स्वागत मंत्री, श्री शंकरलाल सिंघानिया, कोषाध्यक्ष ।